प्रतीक

प्रतीक

मैथिली विहनि कथाक संकलन

मुन्नाजी

-

Prateek: A collection of Maithili seed stories by Munnaji first published in 2012, by M/s Shruti Publications, India

Price: Rs. 200

पहिल संस्करण : 2012

ISBN : 978-93-80538-75-4

श्रुति प्रकाशन : रजिस्टर्ड ऑफिस: ८/२१, भूतल, न्यू राजेन्द्र नगर, नई दिल्ली-११०००८
Website: http://www.shruti-publication.com
e-mail: shruti.publication@shruti-publication.com
Printed at: Ajay Arts, Delhi-110002

Distributor : Pallavi Distributors, Ward no- ६, Nirmali (Supaul), मो -. ९५७२४५०४०५, ९९३१६५४७४२

अनुक्रम

अन्तर-आत्मा

कमरुनिसा

ग्लोबल वार्मिंग

सरकारी दलाल

जिया जरए सगर राति

भावना

तंत्रमेल

बेरपर

दियाद

गाँती

बिढ़नी

अगुआ

साढ़े एकैसम सदी

दुन्नू जना एकै धना

रासि

सड़क-छाप

निवेश

नपना

उत्थर

देश-भक्ति

भूख

डेग

देह, मोन आ प्रेम

आमुख

मुन्नाजीक मैथिली विहनि कथाक संग्रह "प्रतीक" विहनि कथाक प्रतीकात्मकताक प्रतीक बनि गेल अछि। बिरारसँ विहनि उपारि धान आ मेरचाइ रोपबाक प्रक्रिया ऐ संग्रहक सभ कथा सभमे देखमामे आओत। तँ ई छिटुआ नै रोपुआ धानक खेती बनि गेल अछि। तीन मोनक कट्ठा सभ गोटे सुनैत होएब, मुदा एतऽ देखब।

विहनि कथा हास्य कणिका नै अछि, ई कथाक जड़ि अछि, बीआ अछि, छिटुआ धानसँ भेल पौध आ विहनिसँ भेल पौधमे बड़ड अन्तर छै। छिटुआ धान फौदाइ नै छै। से हास्य कणिका बिठुकट्टा होइ छै, ऐ मे हँसी अबै छै, मुदा ओ छिटुआ धान जेकाँ अछि। दोसर बेर ओइ बिठुकट्टा कथाकेँ, हास्य कणिकाकेँ सुनब तँ ने हँसिये लागत आ नहिये छगुणते। तखन जँ बिनु सिझने विहनि कथा लिखाएत, बिनु सिझेने विहनि कथा लिखब तँ लतीफा बनबे टा करत। आ हास्य कणिका विहनि, लघु आ दीर्घ कथा वा उपन्यासमे लेखकीय सामर्थ्यक अनुसार प्रयुक्त होइत रहल अछि आ होइत रहत।

मुदा उसना धानसँ बिराड़मे विहनि नै बहराएत। से बिनु उसीनने बीआ बाउग करऽ पड़त। बिनु उसीनने सिझाबऽ पड़त आ तइ लेल बेशी मेहनति करऽ पड़त। आ बीआ छीटब तैयो सभ धानसँ विहनि नै बहराएत, किछु सँ नहियो बहराएत। से विहनि कथाकेँ सफल हेबाक प्रतिशत कम छै, लघुकथाक सफलताक प्रतिशत कने बेशी छै, दीर्घ-कथा आ उपन्यासक सफलताक प्रतिशत आर बेशी छै। मुदा उपन्यास झंझटिया काज छै, मोन घोर कऽ दै छै, बेशी समए लागै छै। विहनि कथा धाँइ-धाँइ लिखाइ छै। मुदा जहिना कविता लेल आवेग चाही तहिना विहनि कथा लेल, नै तँ ने धाँइ-धाँइ लिखेबे करत आ पद्यक गद्य आ गद्यक पद्य बनबाक आशंका सेहो रहत। सभ उपन्यासकार कतेक रास विहनि उपाड़ि कऽ सजबैए। उपन्यास गद्य छिऐ मुदा ओइमे कोनो पात्र जँ गीत गाबऽ लागए तँ ओकरा अहाँ रोकि देबै? जे उपन्यासकार रहैए ओ विहनि देखि उपन्यासक धनखेती देखऽ लगैए, कखनो ओ विहनि कथा लिखियो दैए, फेर लोभ संवरण नै भेलासँ ओइ विहनिक प्रयोग उपन्यासमे, दीर्घकथामे, लघुकथामे सेहो करैए।

तखन मुन्नाजीक विहनि कथाक की विशेषता। मुन्नाजी हमर पड़ोसी सुरजु भाइ छथि, ओ बिराड़मे जतेक बीआ लगबै छथि ओकर दशो प्रतिशत अपन

खेतमे नै लगा पबै छथि। बाढ़िक इलाका छै से लोकक खेत पड़ल रहि जाइ छै बिनु विहनिक। से सुरजू भाइक पड़ोसी ओइसँ लाभ उठबै छथि कारण बाढ़िमे कखनो काल तीन-तीन बेर धनरोपनी होइ छै, एक बेर रोपू बाढ़ि आएल, दोसर बेर रोपू फेर बाढ़ि आएल। आ सुरजू भाइ छथि तँ लोक विहनि लेल निश्चिन्त रहैए।

आ मुन्नाजीक विहनि कथा सेहो निश्चिन्त करैए।

“रेवाज” विहनि कथा लिअ। गाम घरमे मसोमातकेँ लोक डाइन कहै छै मुदा मुइलाक बाद घराड़ी लेल ओकरा आगि देबा लेल उपरौंझ होइ छै। एतऽ मुदा विहनि लेल जे बीआ छीटल गेल छै से कने उच्च स्तरक छै। एतऽ मृतककेँ बेटा नै छै मुदा पत्नी आ बेटी छै। से जखन मृतकक भाइ कोहा उठबऽ चाहैए तँ विधवा ओकरा रोकै छै आ बेटीकेँ कोहा उठबैले कहै छै। आ संग के देत ऐ नव रेवाजमे, जे आइयेसँ प्रारम्भ भेल अछि? तखन उत्तरो भेटैए- निपुतराहा सभ।

तहिना “कमरुनिसा” विहनि कथा अछि। हसीना मंजिल सन एकटा आरो श्रेष्ठ उपन्यास ऐ विहनि कथा (सीड स्टोरी)सँ मुन्नाजी नै बना सकै छथि की? कमरुनिसाक पिता रहमान। लहठीक काज जेकाँ दम्मा सेहो ओकर सभक पुश्तैनी वौस्तु छलै। कमरुनिसाक अब्बा-अम्मीक जान ई दम्मा लेलकै आ फेर कमरुनिसा...

“जिया जरए सगर राति”मे एड्सक समस्या आ लिविंग रिलेशनक चर्च अछि तँ “दियाद”मे पनहीक ऊपरसँ चिक्कन चुनमुन हेबाक मुदा नीचाँसँ खलओदार केने जेबाक विवरण देल गेल अछि।

“नपना” मे स्त्रीक काजक स्वरूप तय कएल गेल छै। अखनो जनगणना कालमे सरकार स्त्रीक घरक काजकेँ आमदनीमे नै जोड़ैत अछि, आ ऐ कथामे अन्त होइए जखन एकटा स्त्रीक चर्च अबैए जे नोकरीयो करैए आ घरक काजो।

“देह, मोन आ प्रेम” एकटा हास्य कणिकाकेँ कोना विहनि कथामे परिवर्तित कएल जाए, तकर उदाहरण अछि। सबीना आ मोहसिन नाम्ना पात्र लऽ कऽ ई चमत्कार मुन्नाजी केने छथि।

आइ काल्हि जखन लोकक जिनगी गति पकड़ि लेने अछि तखन विहनि कथाक महत्व बढ़ि गेल अछि। मुन्नाजी विहनि कथा लेल समर्पित छथि आ ई संग्रह हुनकर ऐ समर्पणक गुणात्मक अभिव्यक्ति छन्हि।

--गजेन्द्र ठाकुर १९ मइ २०१२

अपन कहब

विहनि कथा संसार

अदौ कालसँ चलि आबि रहल अछि कहबाक परिपाटी। कहबाक लेल समाद होइ छै। मुदा ओ क्षणिक सूचना मात्रा होइछ। कहबाक बेगरताक मूलमे यदि कथ्य वा कथानक हुअए। कहबाक लेल समादक विस्तार हुअए ओ कोनो फलकपर विस्तार लऽ कहऽ बलाक पूर्ण विचारकेँ संप्रेषित करए, सएह कथाक नाम पबैछ। कथा एक लोकसँ दोसरा लोक धरि एक पीढ़ीसँ दोसरा पीढ़ी धरि मौखिक रूपेँ हस्तान्तरित होइत रहल। से तहिया भेल जहिया लिखबाक जनतब वा सरंजामक अभाव छल।

कथा लेखनक प्रारम्भमे कथ्यकेँ सोझाँ-सोझी राखि देल जाइत छल। ओकर मूल बातकेँ बढ़ा-चढ़ा प्रस्तुत कएल जाइत छल, मुदा हुबहु। जेना पहिने मौखिक हल तकरे प्रतिरूप। ई प्रतिरूप समायन्तरे क्रमिक स्तरपर परिवर्तित होइत रहल। कथाक लेल अंग्रेजीमे स्टोरी शब्द अछि। आगू एकरा गढ़बाक प्रक्रिया आ पछाति मढ़बाक प्रक्रिया शुरू भेल, जे शैलीक रूपेँ सोझाँ आएल। फेर विकासक क्रमे एकरा अगिला चरणमे एकटा औसत सीमामे बान्हल जाए लागल, ओहो कथा रहल मुदा अंग्रेजी शब्द परिवर्तन कऽ नाम फरिछाएल शॉर्ट स्टोरी।

मैथिली सहित अन्यान्यो भाषामे शॉर्ट स्टोरीक शाब्दिक अर्थ लघुकथा कहि प्रारम्भ भेल छोट-छोट कथा रचना। आ ओइ लघुकथाक छोट आकारकेँ सेहो लघुकथाक नामे लिखल आ प्रकाशित कएल जाए लागल। आब लोककेँ व्यस्ततामे ई छोट-छोट कथा सोहाए लगलै। आ पाठकीय उत्साह रचनाकार मनोबल बढ़बैत आत्मविश्वासकेँ दूना केलक। परिणाम स्वरूप धुरझार लिखाए लागल अतिलघुकथा।

'लघुकथा' अछि हिन्दी भाषासँ लेल गेल शॉर्ट स्टोरीक उधारी शब्दकोषीय अनुवाद। तकर कारण रहल-पहिल, एकटा नव विधा देखिते मैथिली रचनाकार सब देखाउँसे लिखऽ लगला छोट अकारक कथा। दोसर, जेना हिन्दी साहित्य लेखन अंग्रेजी साहित्यसँ प्रभावित हेबाक संकटसँ उबरि नै पबैए तहिना मैथिली साहित्य रचना, विदेह मैथिली साहित्य आन्दोलसँ पहिने, बहुत लग धरि (पूर्णतः नै) हिन्दी साहित्य लेखनसँ आच्छादित छल। तँ मैथिली रचनाकारकेँ कखनो एकर मैथिली शब्द जेना हिन्दीक 'कहानी' मैथिलीमे 'कथा' अछि, (हिन्दीयोमे ठाम ठीम स्टोरीकेँ 'कथा' शब्देँ प्रयुक्त देखल जाइए) से नै फुराएल हेतन्हि। तँ ओ

अपने अतिलघुकथाकेँ लिखैत रहलाह लघुकथा। ईहो सोलह आना सत्य अछि जे ई नव विधा जहन मैथिलीमे हस्तान्तरित भेल तखन सनातनीये अतिलघु आकार-मात्राक कथा छल । एकर विकसित रूप तँ बीसम सदीक अन्तिम दशकमे देखाए लागल। जहन कि तकनीकी शिक्षा वा व्यावसायिक शिक्षासँ लगीच एवं वैश्विक परिवर्तनसँ प्रभावित नवका लोकक नव सोच विकसित भेल।

अइ विधाक स्वतंत्र रूपक फरिछौट भेलाक पछाति बेगरता भेल ऐ विधा लेल अपन माटि-पानिसँ जुड़ल, अप्पन भाषिक शब्दक। "विहनि कथा" विहनि अर्थात् बीआ। हम एकरा मैथिलीक स्वतंत्र नामेँ आगू बढ़ेबाक प्रयास १९९५ ई. मे मैथिली मासिक "विचार" (सहयात्री प्रकाशन, लोहना, मधुबनी) द्वारा केने रही। वर्ष १९९५ मे 'सहयात्री मंच' लोहना, मधुबनीक साहित्यिक विमर्श प्रस्ताव रखलौं। जकरा हुलसैत सहृदये मैथिलीक कवि, कथाकार श्री राज द्वारा समर्थन कएल गेल। उपस्थित सम जन समवेते स्वीकार कएलनि। उपस्थित जन छलाह- श्री शैलेन्द्र आनन्द, भवनाथ भवन, कुमार राहुल, विजयानन्द हीरा, सच्चिदानन्द सच्चू एवं अन्यान्य।

विहनि कथा (सीड स्टोरी), बीज कथा; स्वयंमे कथाक पूर्ण रूप अछि विहनि कथा। ई ने छोट अकारक कथा छी, आ ने कोनो कथाक छेँट। सामान्येतया कथा कतेको बिन्दुकेँ छुबैत बिरड़ो जकाँ उधियाइत पाठककेँ अपन उद्देश्य कहबामे सक्षम भऽ पबैए। मुदा विहनि कथा माने बीज कथा स्वयंमे संपूर्ण कथा अछि। जे पाठककेँ एक मात्र अपने खुटापर खुटेसल सन राखि अपन उद्देश्यक पूर्णताकेँ एक क्रममे बिकछा लेखकीय मनस्थितिकेँ फरिछा दैए। आ पाठक ओइ सोचकेँ हुबहु मगजमे समा स्थिर भऽ जाइए।

विहनि कथा एकटा बीया सन छोट की पैघ संपूर्ण गाछ हेबाक सामर्थ्य रखैए। तहिना विहनि कथा आकारेँ लघु होइतो कथाक सभ पक्ष, कथ्य, शिल्पकेँ एक खास बिन्दुपर समेटि कथाक संपूर्णता प्रदर्शित करबामे सक्षम अछि। जेना बीया पारबाक पछाति अँकुराइए, फेर दुपतिया सन देखाइत एकटा गाछक रूपमे अपन संपूर्णता पबैए तहिना विहनि कथा भूमिका, कथ्यक स्पष्टीकरणक संग सोद्देश्ये गढ़ल आ मढ़ल जाइए आ लेखकक समस्त विचारकेँ छोट आकारमे सोद्देश्यपूर्ण बना उजागर करबामे सक्षम होइए। जेना कोनो बीया अंकुरा कऽ गाछक सभ पक्ष यथा डारि, पात आदिसँ युक्त होइछ एकटा ठुट्ठ गाछ मात्र नै। तहिना विहनि कथा समस्त गुणेँ भरल-पूरल कथा छी। एहेन कथा नै जे दृष्टांत मात्र भऽ ठमकि जाए। एहेन कथा नै जकर कोनो ओर-छोड़ नै हुअए। विहनि कथा एहनो कथा नै अछि जकरा पूरा पढ़लाक पछाति लेखकक लेखन उद्देश्य

बुझबाक लेल कात-करोट मुरियारी देबऽ पड़ए। एकर उद्देश्य सोझाँ सोझी फरिछाएल होइछ।

विहनि कथा लघु अकारे शुरू भेल। आइ ई लघुकायमे ओइ लघुकथाक एकटा विकसित रूप अछि जे संभवतः मैथिलीमे बीसम सदीक अन्तिम दशकमे अपन स्वतंत्र रूपक वा विधाक फरिछौट करबामे सक्षम भऽ सकल। विहनि कथाक संपूर्णताकेँ ऐ तरहेँ कहल जा सकैछ- विहनि कथा कथाक संपूर्ण गुणक संग ओइसँ ऊपर उठि, अपन लघुकायमे समेटल एक निश्चित बिन्दुपर ठाढ़ भेल लेखकक उद्देश्यक पूर्ति करबाक संग पाठकक मगजक भरपूर खोराक अछि।

विहनि कथा २१म सदीमे रचनाकार, सम्पादक संग-संग पाठकक बीच सेहो फरिछाएल अछि। तकरे कारण अछि जे आब विहनि कथा छोट गातमे अपन सभ संपूर्णता नेने कागजपर उतरि सोझाँ अबैए। आबक समयमे दृष्टि विहीन नै, दृष्टि सम्पन्न रचनाकार सभ अइ विधाक विकासमे लागल छथि। तँ ई आब नहिये चुटुक्का कहाइए आ नहिये कथाक छैँट वा दृष्टांत। हम पुनः ई स्पष्ट करैत कहब जे- विहनि कथा ठोस कथ्य, माँजल शिल्पमे कोनो विषयपर वर्णित ओ वौस्तु थिक जे पाठकक मन-मस्तिष्कपर चोट कऽ ओकरा सम्वेदित कऽ चिरकालिक छाप छोड़ि सकबामे सामर्थ्यवान होइए। विहनि कथा, मात्र गुदगुदी करैबला वा चुट्टी काटि बिसबिसी दैबला वौस्तु नै रहि गेल आब। ई रचनाकार आ पाठकक मोनमे समा स्थिर भऽ जाइ बला कथा थिक।

आजुक व्यस्त जीवन मध्य लोककेँ कखनो ओतेक पलखति नै भऽ पबै छै जे ओ आब घंटा-घंटा भरि बैसकी लगा एके रचना पढ़ि मोनकेँ सांत्वना देत। क्षण-क्षण बदलैत परिस्थिति, बदलैत छेब-छटा आ तइ हेतु अधिकसँ अधिक अर्थक जोगार मध्य कटि जाइछ लोकक जिनगी। आजुक लोककेँ मीडियासँ क्षण-क्षण नव आ रोमांचित करएबला खोराक भेटि जाइत अछि तँ साहित्यक प्रति बहुत रूचि नै बाँचब स्वाभाविक अछि। ओना आइयो उपन्यासकेँ खूब पढ़ल जाइछ। मुदा ओकरा आम पाठक मात्रक खोराक नै कहि सकै छी। तँ रचनाकारकेँ सेहो आब सम्हरि कऽ सशक्त आ अल्प पलखतिक बीच सामंजस्य बैसाबऽ बला रचना करब आवश्यक अछि। रचनाकार, विशेष कऽ विहनि कथाकारक ई पहिल दायित्व बनैए जे ओ समयक संग चलि पाठकक समय संग भेल व्यस्तताकेँ देखि ओज आ सरल भाषिक रचनासँ विहनि कथा संसारमे योगदान सामर्थ्य हासिल करथु।

पाठकक आजुक क्षण-क्षण बदलैत परिस्थिति मध्य विहनि कथाकारो जिबैत छथि। तँ ओ यदि आजुक बेहाल अर्थ तंत्र, मशीनी युगक मध्य लोकक मशीन

सन हएब परिस्थितिकेँ गसिया कऽ पकड़थु। आ अही परिस्थितिकेँ पाठकक सोझाँ परसि कऽ पाठककेँ मजगूती देबामे अपनाकेँ सक्षम करबाक शक्ति अर्जित कऽ रचनारत रहथु। तहन विहनि कथा, विहनि कथाकार आ पाठकक मध्य सामंजस्य बैसि पाओत। पाठकक प्रत्येक क्षणक व्यस्तता, किछु नव करबाक सनक, अर्थोपार्जनक पाछाँ भगैत रहलासँ उपजल तनावसँ मुक्तिक साधन सेहो अछि विहनि कथा। पाठक जखन सभसँ विलग अल्पावधिक लेल खाली भेटल समयक उपयोग करऽ चाहैए तँ ओकर संग देबामे सक्षम अछि विहनि कथा। ऐ सभ बेगरता पूर्ति करबामे सक्षम विहनि कथा अपन फराक जगह छेकबामे सक्षम भेल अछि।

आब विहनि कथाकार जखन समय संग चलि पाठकक मनोस्थितिक अनुकूल रचना देबामे सामर्थ्यवान छथि। ओ अपन पहिल दायित्व पाठकक मोनकेँ भाँपि तदनुकूल रचनासँ पाठककेँ बन्हवामे सक्षम भेल छथि। तहन बेगरता उठै छै एकर मूल्यांकनक। वर्तमानमे एहेन कोनो दृष्टि फरिच्छ समीक्षक वा समालोचक देखार भऽ ऐ विद्यापर काज करबामे सक्षम नै भऽ पौलाह अछि। तकर ठोस कारण अछि बदलैत समय आ परिस्थिति मध्य ओहने सोचक सामंजस्य। जे स्थापित समीक्षक छथि से दू तीन दशक पछातिक नजरिये रचनाकेँ देखबाक प्रयास करताह। हुनका ऐ मे भऽ सकैए किछु नै देखाइन। कारण जे ओ सभ कथाक जड़ मूलकेँ देखैत भोगैत एलाह अछि विहनि कथा ओइसँ ऊपरक सोच आ फराक शैलीमे अछि। एकर सत्य आ पूर्ण गात तहिया फरिछाएल जहिया मठाधीश समीक्षक सबहक सोच ओइ कथा, ओकर प्राचीन चरित्र मध्य सन्हिया बैसि गेल। समाजक एकटा समस्या मँहगाइ उदाहरण स्वरूप सनातनी आ चिरायु अछि। ई कहियो खत्म होइबला चीज नै अछि। मुदा तैयो एकर चरित्र आ चेहरा सीढ़ी दर सीढ़ी बदलैत रहैए। आ ओइ संग ओइ मँहगाइक प्रतिफल सेहो ओहिना बदलैत नजरि अबैए। यथा यात्रीजीक कवितामे वर्णित मँहगाइ साहित्यमे चर्चित अछि। आइ ओहेन कोनो नव ठोस रचना मँहगाइपर नै अछि। तहिया लोक भूखे मरैत छल, पेट काटि कऽ जिबैत छल। गदैली ओढ़ि सर्दी कटै छल। आजुक मँहगाइ मध्य कियो भूखे नै मरैए। आ सामान्यो वर्गक लोक कम्मल ओढ़ि आ हीटर जरा सर्दी बितबैए। की ई फर्क सनातनी समीक्षक फरिछेबामे सफल भऽ सकताह? किन्नहुँ नै। किएक तँ अइ बदलल स्थितिपर ध्यान देबाक पलखति कहाँ छनि। ओ तँ प्रतिक्षा करै छथि रचनाकारकेँ जुएबाक, रचना चाहे खिज्जा रहि जाउन।

कथासँ जुड़ल लोक विहनि कथा मादे विचार कऽ सकैत छलाह। मुदा

हुनकर सभक दृष्टि 'विहनि कथा'क प्रति फरिच्छ नै छनि, उदाहरणतः रंगकर्मी कुणाल, जे नाटकक संभ्रान्त, परिपक्व ज्ञाता छथि ओहो कथापर लिखबा काल विहनि कथाकेँ अस्तित्वहीन कहि बेरा दै छथि। मायानन्द मिश्र मैथिली कथा धाराक मजगूत खाम्ह छथि, ओ लघुकथा (विहनि कथा)केँ चुटुक्काक संज्ञा देलनि। माया बाबूक सोच समीचीन अछि किएक तँ ओ जइ दशकक सोचक लोक छथि तइमे लघुकथा (विहनि कथा) विद्या फरीछ नै छल। तेँ हुनको ऐ प्रति दृष्टि फरीछ नै हएब स्वाभाविक। ओ कथा विकासक आलेखमे लघुकथा (विहनि कथा)क चर्चे केलन्हि सएह बहुत अछि। [मैथिली कथाक विकास नामक आलेख, साहित्य अकादमी दिल्ली सँ प्रकाशित पोथी -'मैथिली कथाक विकास'- सं वासुकी नाथ झा, २००३].

विहनि कथा वा कथाकारक मूल्यांकन हेतु विहनि कथाकार स्वयं ऐ दिशामे कान्ह उठाबथि तँ सही मूल्यांकन संभव भऽ पाओत। मैथिली समीक्षाक एकटा कमजोर तत्व ईहो रहल जे ओ रचनात्मक दृष्टियेँ सड़क छाप होइत छथि। फरिछेबाक ई जे ओ अपन गुणगान मात्रा सुनऽ चाहै छथि। आलोचनामे कमी नै वाह वाही हेबाक चाही। जँ समीक्षक द्वारा हुनकर रचनात्मक दोष वा कमीकेँ उघारि सभक सोझाँ कऽ देल गेल तँ समीक्षक भऽ गेला हुनक कट्टर दुश्मन। आ तकर पछाति हुनका, रचनाकारक मुँहे, अज्ञानी, उदण्ड, स्वार्थी आदि संज्ञासँ जानए लागब। ईहो सोलह आना सत्य अछि जे मैथिली समीक्षामे किछु गोटे कृतित्वसँ पहिने व्यक्तित्वकेँ प्राथमिकता दऽ समीक्षा लिखि रइल छथि। तँ जा धरि रचनाकारमे आलोचनात्मक विचार वा कमी सहबाक सामर्थ्य नै हएत, स्वथ्य आलोचना कतऽ सँ टांग पसारि सकत वा अपन बैसकीपर बैसि अराम कऽ सकत? ओहने किछु रचनाकार सभ द्वारा समीक्षाकेँ ओलि सधेबाक सूत्रक रूप सेहो ठाम-ठीम प्रयुक्त होइत देखाइत रहल अछि।

आजुक विहनि कथा पहिने हिन्दी भाषासँ उधारी लेल शब्द 'लघुकथा' नामे लिखाइत रइल। अखन धरिक मौखिक जनतब अनुसारे लघुकथा शब्द प्रयोगे छपल पहिल कथा १९६८ मे मिथिला मिहिर मे काली कुमार दास लिखित 'बुड़िबक वर' छल। अइसँ पहिने छेँट कथा, कटपीस कथा, मिनी कथा, फिलर कथा........आदि नामे ई छपैत रहल छल। एकर पछाति जे रचनाकार विहनि कथामे सक्रिय भेला ओ नाम अछि- डॉ हंसराज, ए. सी. दीपक, तकर पछाति लिली रे, राजमोहन झा, एम. मणिकान्त, अमरनाथ, रामलोचन ठाकुर आदि। अइ नाममे सँ बेशी गोटे विहनि कथा लिखबाक प्रयोगधर्मिता मात्रक निर्वहन केलनि। हँ एम. मणिकान्त मिथिला मिहिरक माध्यमे कतेको वर्ष धरि विहनि कथा लेखनक

नियमितता बनौने रहला। मुदा दुखद वा हास्यास्पद बात ई जे वर्त्तमानमे हुनक एको टा रचना उपलब्ध नै अछि। डा. हंसराज जी क मैथिलीक पहिल विहनि कथा संग्रह 'जे की ने से' (प्रकाशित १९७२ ई.) मैथिली विहनि कथा पेटारक पहिल सनेस कइल जा सकैए। ऐमे हास्य व्यंग्यसँ भरल लघुकायक कुल ३५ गोट विहनि कथा संग्रहित अछि। पन्नापर अंकित वर्षक अधारे एकर सभ रचना १९६३ सँ १९७२ मध्य लिखल रचना अछि। एकर कथा सभ तत्कालीन राजनैतिक सामाजिक कुव्यवस्थापर चोट करैत लिखल गेल अछि। किछु रचना आइयो प्रासंगिक अछि। हंसराज निश्चित रूपसँ विहनि कथा आन्दोलनक बीया बाउग केलनि आ तँ आइ विहनि कथाक गाछ झमटगर होइत देखाइए।

किछुए वर्ष पछाति हिनकर अगिला पीढ़ीक श्री अमरनाथ अपन 'क्षणिका' विहनि कथा संग्रह प्रस्तुत केलन्हि (वर्ष १९७५ ई. पुर्नप्रकाशन २०११ ई.) आ एकरा एक सीढ़ी आओर ऊपर लऽ जेबाक ठोस प्रयास केलनि। ऐ संग्रहक कथा सभ खलील जिब्रानक कथाक लगीच बुझाइए आ सभ बिन्दुकेँ छुबैत रचना कएल गेल बुझाइए। एकर अधिकांश रचना आइयोक समयसँ मेल खाइत बुझाइए। मुदा लेखकसँ दूरभाषिक वार्तालापक अनुसार राजहंस जकाँ हिनको कोनो रचना तत्कालीन पत्रिकामे प्रकाशित नै भऽ सोझे संग्रहित अछि।

वर्ष १९७५ विहनि कथाक स्वर्णिम शुरूआत वर्षक रूपमे देखार भेल बुझाइए जखन 'मिथिला मिहिर' (पाक्षिक) अपन विहनि कथा विशेषांक (लघु कथा विशेषांक नामसँ) निकालि मोकाम तँ नै मुदा बाट अवश्ये देखार केलक। ई साहसिक काज भेल कविक द्वारा ऐ नव विधाक लेल। मिथिला मिहिरक अइ विशेषांकक समय सम्पादक छलाह आदरणीय भीमनाथ झा। ओना तँ 'अन्हरीक गाए बियेलै तँ सभ डाबा लऽ कऽ दौड़ल' बला कहावत चरितार्थ होइत देखाएल। फेर २३ बर्ख बीति गेल। खएर! बाँझ गाए गाभिन तँ भेबे कएल.....।

कथानकक नब्जक सुन्नर पकड़ि रखनिहार श्री विभूति आनन्द जी जेबी पत्रिका 'कुश' क नवम अंक वर्ष-१९७८ मे पत्रिकाक गातक अनुसार छओ गोट विहनि कथाक समावेश कऽ निकाललनि विहनि कथा विशेषांक (लघुकथांक विशेषांक नामसँ)। अही वर्ष १९७८ जुलाइमे साहित्य अकादमी, दिल्ली द्वारा कथापर आयोजित सेमिनारमे परिचित कथाकार श्री रामदेव झा, कथापर प्रसंगे विहनि (लघु) कथाकेँ शामिल कऽ एक अनुच्छेद लिखि एकर विशिष्टता जतौने छलाह। जइमे विहनि (लघु) कथाक वैश्विक पटलपर खलील जिब्रानक चर्चा आ तुलना एवं मैथिली विहनि (लघु) कथाकार मे सँ अमरनाथ जीक योगदानक चर्चा कएने छलाह।

आठम दशक विहनि कथाक संगोरसँ वंचित रहल। मुदा ई विहनि कथा लिखनिहारक एक टा पैघ हेँज तैयार केलक, जइमे प्रमुख नाम अछि- विभूति आनन्द, शैलेन्द्र आनन्द, श्रीराज, प्रेमकान्त झा, वैकुण्ठ झा, देवशंकर नवीन, प्रदीप बिहारी, ताराचन्द्र वियोगी, चण्डेश्वर खाँ आदि। ई समूह रचनाक दृष्टिये नव आँखि पाँखिबला छल। साम्यवादी विचारसँ प्रभावित मुदा आपत कालक दुर्दशासँ प्रेरित आ पीड़ित। विहनि कथाक पहिल संग्रह १९७२ मे बहराएल दोसर १९७५ ई. मे आ तकर पछाति अकाल! किएक? २२ वर्षक एहेन खालीपन विहनि कथाक इतिहासकेँ ठमकि जेबाक लेल बाध्य केलक। एकर बाधक छलाह तत्कालीन संपादक, सरकारी आ निजी समिति-संस्था आ प्रकाशक। मुदा तहूँसँ बेशी जिम्मेवार ऐ पीढ़ीक रचनाकार छला जे अपनाकेँ दुनू विधापर कलम चला भरमा लेलनि वा गद्यक ऐ प्रकारक उस्सर खेत देखि डरि कऽ अपनाकेँ कतिया लेलनि। अइ पीढ़ीक कतिपय रचनाकार ऐ विहनि कथा विधाक राशि नवका रचनाकार सभकेँ पकड़ा निश्चिन्त भऽ सुस्ताए लगलाह। कारण छल जे एकर फरिछाएल रूप मध्य अपन अस्तित्व वा कोनो लाभक जोगार वा प्रतिष्ठा नै नजरि एलनि। अही बीच आएल तन्त्रनाथ झा समग्र, ओइमे सेहो किछु विहनि कथा संकलित अछि।

मैथिली साहित्यक जिरात मध्य विहनिकथाक प्रसंस्कृत बीया नव रूपे बाउग केलनि अइ पीढ़ीक नवतुरिया। जइमे नाम छल ज्योति सुनीत चौधरी, दुर्गानन्द मंडल, कपिलेश्वर राउत, धीरेन्द्र कुमार, राजदेव मंडल, बेचन ठाकुर, राम प्रवेश मंडल, भारत भूषण झा, मानेश्वर मनुज, उमेश मण्डल, जगदीश प्रसाद मण्डल (बाल विहनि कथा संग किछु सुन्दर विहनि कथा जेना थलकमल-/ घरडीह/ खाताखेसरा-/ सबूत/ कौआक मैनजन), रामकृष्ण मण्डल छोटू'', परमेश्वर कापड़ि, रघुनाथ मुखिया, ऋषि वशिष्ठ, शिव कुमार झा ''टिल्लू'', मिथिलेश कुमार झा, सत्येन्द्र कुमार झा, नवनीत कुमार झा, कौशल कुमार, अनमोल झा, कुमार मनोज कश्यप, विनीत उत्पल, धनाकर ठाकुर, आशीष अनचिन्हार, सतीश चन्द्र झा, गजेन्द्र ठाकुर, भवनाथ भवन, राम विलास साहु, मुन्नी कामत, शंभु कुमार सिंह, संजय कुमार मंडल, मिथिलेश मंडल, लक्ष्मी दास, अमित मिश्र, जगदानन्द झा 'मनु', चन्दन झा, ओमप्रकाश झा, सन्दीप कुमार साफी, जवाहर लाल कश्यप, मिहिर झा, रामदेव प्रसाद मण्डल झारूदार, प्रेमचन्द्र पंकज, अखिलेश मंडल, अमलेन्दु शेखर पाठक, मधुकर भारद्वाज, श्रीधरम, देवेन्द्र झा, सच्चिदानन्द सच्चु, मिथिलेश कुमार झा, कुमार राहुल, दिलीप कुमार झा ''लूटन'', मुन्नाजी आदिक। ऐ पीढ़िक समूह द्वारा विहनिकथा पर धुरझार काज भेल। अइ ठामसँ असली

फरिछौट भेल विहनि कथाक। आ हिन्दीक उधारी शब्द लघुकथा सँ विलग खाँटी शब्द- विहनिकथा स्थापित भेल।

बीसम सदीक अन्तिम दशकक पहिल काज भेल स्व. ए. सी. दीपक जी द्वारा 'विविध विहनि (लघु) कथा विशेषांक (मार्च-१९९४ मे)। तकरा पछाति नवका पीढ़ी सेहो कान्हपर वीरा उठेलक आ शुरू भेल वैश्विक बदलल सामाजिक परिदृश्य, तकनीकीय भेल नव-नव क्रान्तिक संग जनमल नव अवधरणाक संग विहनि कथा लेल नव-नव काज।

१९७५ ई.मे आएल 'क्षणिका' क दू दशक बाद १९९५ ई. कँ विहनि कथाक स्मृतिवर्ष कहि सकैत छी। २० फरवरी १९९५ कँ मुन्नाजी एवं मलयनाथक संयोजनमे हटाढ़ रूपौली, मधुबनीमे आयोजित भेल विहनि कथा गोष्ठी, जकर अध्यक्षता केलनि पं यन्त्रनाथ मिश्र आ एकर मंच संचालन कुमार राहुल द्वारा भेल। ऐ अवसरपर उपस्थित विहनि कथा पाठ केनिहार छलाह- भवनाथ भवन, मलययाथ मण्डन, प्रेमचन्द्र पंकज, मुन्नाजी, शैलेन्द्र आनन्द, प्रभु कुमार मंडल, मतिनाथ मिश्र, उमाशंकर पाठक, श्यामाचन्द्र ठाकुर, कुमार राहुल, मीरा कर्ण, ललन प्रसाद, सुनील कर्ण, सच्चिदानन्द सच्चु एवं करणजी। पढ़ल गेल रचना सभपर समीक्षीय टिप्पणीकार छलाह- शैलेन्द्र आनन्द, मुन्नाजी, भवनाथ भवन एवं प्रेमचन्द्र पंकज। हमरा जनतबे विहनि कथाक ई पहिल गोष्ठी छल। ५ मार्च १९९५ कँ सहयात्री मंच लोहना, मधुबनी द्वारा मुन्नाजीक विहनि कथा 'नामरद' क एकल पाठ आ अइ पर 'बहस' क आयोजन कएल गेल। अइमे प्रमुख विचारक छलाह- श्रीराज, शैलेन्द्र आनन्द, विजयानन्द हीरा, भवनाथ भवन एवं प्रेमचन्द्र पंकज। हमरा जनतबे विहनि कथा आ कथाकारपर एहेन 'बहस' केर ई पहिल आयोजन छल। जुलाइ १९९५ मे कानपुर सँ बहराइत नवतुरिया त्रैमासिक पत्रिकाक विहनि कथा विशेषांक आएल, संपादक छलाह- प्रेमकान्त झा एवं वैकुण्ठ झा। अइमे १९ गोटेक कुल १९ गोट विहनि कथाक समायोजन छल, आ अइ विहनि कथा विधाक फरिछौट कऽ एकरा नव दिशा देखेबाक प्रयास करैत मुन्नाजीक आलेख अछि, जे कि कोनो विहनि कथा विशेषांकमे ऐ तरहक पहिल आलेख थिक। अही दशकमे प्रारम्भ भेल कथा गोष्ठी सेहो विहनि कथाक बाट बनेबा वा फरिछेबामे उत्प्रेरकक काज करैत रहल। कथा गोष्ठीक जुलाइ १९९७ क महिषीक आयोजनमे एके संग दु गोट पोथीक लोकार्पण भेल, 'खंड-खंड जिनगी' (प्रदीप बिहारी) आ 'शिलालेख' (तारानन्द वियोगी, जइमे कुल ३५ गोट रचना संकलित भेल अछि)।

२१म सदीमे समय आ परिस्थितिकँ अकानैत सभ रचनाकार खुलि कऽ

विहनिकथा दिस जुमल छथि। पत्रिकाक संपादक सभ किछु कोना अइ लेल समर्पित करऽ लगलाह। अइ नव सदीक नव सोचक पहिल विहनि कथा संग्रह आयल- 'बुझनूक' (२००२ ई.), एकर रचनाकार श्री वैकुण्ठ झा जी अपन ३६ गोट रचना लऽ ऐ विधाकेँ बाट देखेबाक ठोस प्रयास केलन्हि। एकर बाद तँ संग्रहक झड़ी लागि गेल बुझू। अगिला संगोर हिन्दी मैथिलीक संयुक्त रचनाकार विहनिक कथाक दिशावाहक श्री देवेशंकर नवीन जी अपना कथा संग्रह-'हाथी चलय बजार' (२००४ ई. मे ३१ गोट विहनि कथाक संगोर) संग उपस्थिति दर्ज करौलनि। तँ २००५ ई. मे पुरान सोचक ठोस कथाकार श्री मनमोहन झा जी अपन विहनि कथाक संगोर, मिथिलाक निशापुर मे' आनि एकरा एक डेग आओर आगाँ बढ़ेबाक प्रयास कएलनि। एकर आमुखमे श्री विजय मिश्र जी एकरा गद्य काव्यक संज्ञा देलनि अछि। वास्तवित रूपेँ तँ गद्य काव्य, काव्यक गद्यात्मक शैली थिक। ईहो सत्य अछि जे विहनि कथा गद्य रहि कविताक पूर्णतः लगीच मानल जाइए। मुदा अइमे संकलित २४ गोट रचना विहनि कथे थिक, आन किछु नै। वर्ष २००७ मे ''अहींकेँ कहै छी'' (सत्येन्द्र कुमार झाक ५१ गोट विहनि कथाक संग्रह) आएल। ई संग्रह विहनि कथाक प्रति पूर्ण सोझराएल आ दृष्टि फरीछ रचना सबहक संगोर थिक। युवा पीढ़ीक बहुविध, प्रतिभा संपन्न लेखक ओ संपादक श्री गजेन्द्र ठाकुर अपन रचना समग्र- कुरूक्षेत्रम् अर्न्तमनक- मे लघुकथाक संग १६ गोट ठोस आ कथ्य ओ शिल्पगते फरिछाएल विहनि कथा आनि विहनिकथा संसारमे श्रीवृद्धि केलनि अछि। अखन धरि एक लिखे चलैत विहनि कथाक लिख सँ हँटि २०१० ई. मे श्री जगदीश मण्डल जी सभसँ इतर बाल मनोवैज्ञानिक विहनि कथा संग्रह 'तरेगन' क संग आन रचनाकार केँ सम्मोहित केलनि। २१ म सदीक पहिल दशकक अन्तिम चरणमे मैथिली ई पाक्षिक 'विदेह' अइ विहनि कथाक नव इतिहास लिखबा वा बनेबामे अग्रणी मानल जाएत। अपन ६७म अंक विहनि कथा समायोजनमे देशी आ विदेशी ठोस रचनाक संगोर, एवं अइ विहनि कथाक शास्त्रीय विवेचन कऽ अएना स्वरूप झलका एकर बाटकेँ मोकामक लगीच अनबामे ई पूर्णतः सफल भेल अछि। अइ अंकमे कुल ३२ रचनाकारक ७९ गोट रचना अइ विधाकेँ पूर्णतः फरिछा, सभक सोझाँ अनबामे सौ प्रतिशत सक्षम भऽ देखार भेल अछि। संपादकक अलाबे एकर सफलताक श्रेय छन्हि अइ अंकक अतिथि संपादक-मुन्नाजीकेँ। मुन्नाजी जी बड गम्भीरता पूर्वक सभक समायोजन एवं अपन आलेखेँ दोसरो रचननात्मक प्रकृतिकेँ फरिछेबाक सफल प्रयास केलनि अछि।

लगभग दू दशकसँ अइ विधामे रचनात्मक उपस्थिति दर्ज करबैत रहलाह,

आ परिणाम ‘‘समय साक्षी थिक’’ २०११ मे आएल, ई संग्रह श्री अनमोल झा जीक कुल १५० रचनाक अपन जिनगीक भोगल यर्थाथक अएना थिक। २०१२ मे ‘‘टेक्नलजी’’ (अनमोल झा) एवं ‘‘टीस’’ (मिथिलेश झा) संग्रह सेहो विहनि कथाक बखारी भरबामे समर्थ बुझना जाइछ। अनमोल जीक १४९ रचनाक संग्रह सनातनी यथार्थ परसैए। ततै मिथिलेश झा जीक ‘टीस’ क ४५ गोट रचना पाठकक मानसिकताकेँ झंकृत करैए। जे कि विहनि कथाक थाती वा धराउ सदृश अनुभव करैए।

१० दिसम्बर २०११केँ ‘सगर राति दीप जरय’क ७५म कथा गोष्ठीक आयोजन पटनामे कएल गेल, ऐ अवसरपर मुन्नाजी द्वारा मैथिलीक पहिल विहनि कथा पोस्टर प्रदर्शनी कएल गेल छल।

ऐ तरहें विहनि कथा संसारक परिदृश्य पूर्णतः भरल पूरल भऽ गेल अछि। आइ सभ दिन कियो ने कियो स्वाभाविक रूपेँ जुड़ि अपन योगदान दैत एकरा मोकामक ड्योढ़िपर आनि पट खुलबाक प्रतिज्ञामे ठाढ़ देखाइत छथि। मोकाम भेटि गेलै तँ घर पैसैमे समय नै लगतै।

-- मुन्नाजी

रेवाज

रूक....।

ऊँक नै लगा सकै छँ तोँ।

रामरीत पासवानक मुइलाक पछाति, भरि गामक लोक ओकर अंगनासँ दुरा धरि सोहरल छल। विधवाकेँ सांत्वना देबाक लेल।

मुदा ओकर दियादवादकेँ लगलै कठाइन।

दरअसल मालिक मुत्तारक ई भीड़ तँ जुटल रहै बजरंगीक सहयोगमे। बजरंगी, रामरीतक छोट भाए, मालिक-मुक्तारक पाछु चटुआ आ अखनुक वार्ड सदस्य।

ओ भैयारी निभेबाक नै, घराड़ी हड़पबाक फेरमे छल, किएक तँ रामरीतकेँ बेटा नै छलै।

ओकर नजरि रहै रामरीतक छः कट्ठा घरारी पर, तेँ सभकेँ जुटा लेने छल, गवाहक रूपमे, भविष्यक लेल। आ लहास उठेबासँ पहिने फरमान सुना देने छल- आगि जे देतै आ श्राद्ध जे करतै, घरारीक अधिकारी तँ उएह ने हेतै।

समवेत स्वीकृतिये मुड़ी डोलल छल- हँ...।

चलु-चलु लहास उठबै जाउ, बेशी विलम्ब नीक नै।

बजरंगी, कोहा उठाबऽ।

-नै, किन्नहुँ नै। विधवाक आक्रोशक स्वरकेँ सुनि सभ शांत भऽ गेल।

मंजुला, कोहा उठा आ आगि ले। अपन पिताक हृदयक एक मात्र टुकड़ी अछि ओ। आगि उएह देत।

ठीक छै, चलु...।

मुखाग्नि हमहीं देब पिता हमर छथि, हुनक अंश हम छी, बजरंगी कक्का तँ हुनक सम्बन्धी मात्र छथिन।

ईह... जेना रामरीतक बेटा रहथिन, अधिकार जताबऽ एलीहे। दबल स्वर भीड़क बीचमे सँ सुनाएल।

बेटा नै छी तेँ कि, हम तँ हुनके रक्तबीजक पदार्पण छी। ओ निपुत्र छथि, मुदा निःसंतान नै।

आइ सँ अही रेवाजक शुरूआत बुझू।

आ संग के देतौ?

निपुतराहा सभ।

पड़ौआ

सुयाल आ कैथरिन भारतक यात्रा पर जखन आएल तँ पहिल प्रवेश मिथिलामे भेलै। दरअसल मैथिलेजन ओकर जानक रक्षक सिद्ध भेल रहथि।

सत्य छल जे ओ जोड़ी प्रेमक समुन्दर मे डुमकुरिया कटैत मिथिला धरि आबि गेल छल। किएक तँ ईसाई आ पारसी दू धर्मक जोड़ाक प्रेम जर्मनीक डच समुदायक विरूद्ध छल।

मिथिल प्रवासक क्रममे ओ एतुका एकटा बिआह स्थानीय रीतिये होइत देखि भाव विह्वल भऽ उठल। अगिला दिन लहँगा चुनरी आ शेरवानीमे सजल वर कनिया सभटा सुधि हेरा अपनाकेँ स्वर्गक वासी बुझि आनन्दविभोर भऽ मैथिल मन्त्रे एक दोसराक हेबाक शपथ लेलक।

जोड़ा बाजि उठल, आह! हमर देश मानवक आ दानवक देश अछि, ऐठाम तँ सभ जन देव स्वरूप लगैछ।

ओकरा एखन धरि आतिथ्यक भान होइत रहलै। एतुका सत्य नै जानि पौने छल जे एतौ विजातिय विआह छओड़ा छओड़ीक प्रेमक सभसँ पैघ शउत्रु बनि ठाढ़ भेल रहैछ।

किछुए दिनक पछाति ओ जोड़ा मैथिल जनक मुखबिरीसँ हथकड़ीमे बन्हा गेल।

टकटकी

बेरा बेरी लोकक जमा भेल भीड़क सोझाँ ठेहि पाड़ि कऽ कानए लागल छल ओ छओड़ी। कियो किछु पुछै तँ उतारा नै दऽ सबहक दिस टुकुर-टुकुर तकैत रहैत छल।

भीड़ बढ़ैत जा रहल छल.... मुदा सभ मूक दर्शक बनल।

निशब्द भीड़मे सँ आब शब्द बहरेलै ——“गै, ई कह, तोहर नाम ठेकान की छौ?”

-यौ, छोड़ू की करब नाम ठेकान बुझि?

-तोरा घर तक पहुँचा देबौ।

-यौ, हमर नै आब कियो सहारा बचल आ ने कोनो ठेकाना, हम तँ दंगा पीड़ित शिविरमे सँ भागि एलौं अछि।

-किए भगलीही अपन जान बचेबा लेल?

-नै यौ, अपन संपत्ति बचेबा लेल।

-आँय, तहन तो अपन गाम-घर जो ने अपन संपैतक रक्षार्थ।

-गाममे किछु कहाँ बाँचल अछि। जे किछु संपत्ति शेष अछि ओ तँ हमरे लग अछि आ तकरे बचेबा लेल तँ गामसँ भगलौं।

-‘कत्तौ कियो रक्षक नै देखाएल?’

-के पुरूष राखत तोरा? जे राखत ओहो बदनाम भऽ जाएत।

ठठा कऽ हँसैत - यौ, जँ पुरूष सभकेँ बदनामीक कनिको डर होइतै तँ गामसँ परदेश धरि हमर संपैतक नोचा-नोची नै ने करितए?

भीड़ उछहि गेल।

नियंत्रण

माइकल घर मे वापिस अबिते छितराएल चीज सभ देखि चित्कारि उठल- ओह गॉड!

-द्रौपदी, जकर सबहक किरदानीक फल छौ ई तीन टा बच्चा, ओकरे सभ लग अइ तीनोकेँ छोड़ि कऽ आएल कर काज करबाक वास्ते। नै जानि कतेक दुरखा लागि जनमओने हएत एतेक बच्चा!

-चुप्प रहू मालिक, बहुत बजलौं। हमर सबहक घरबला एखनो धरि मुट्ठीयेमे रखै छै हमरा सभकेँ। मालकिन जकाँ छुट्टा हम सभ नै छिऐ।

-गै, देखै छीही अपना मलकीनीकेँ एके टा बेटीमे प्रसन्न। इएह तँ फाँट देखबैए बड़कबा आ छोट घरक बेटी-पुतौहमे।

-नै मालिक, दुनू घरक पुतौह, पुतौह जकाँ नै रहै छै। अन्तर छै दुनूमे। छोटकाक पुतौह जन्मा लैछै, आ बड़काक पुतौह ... खसा लै छै।

गहना

-दीदी प्रणाम!

-प्रणाम, प्रणाम। केना छी?

-ठीक छी।

“लिअ, आबि गेली मक्खीचूस”।, मौगीक समूहमे सँ स्वर बहराएल। पूरे गलीक मौगी सभ जहन एक ठाम जुटए, तहन अनुपस्थित मौगी सभपर कएल गेल हिनताय मात्रे ओकर सबहक समयक कटना छल। अओर ई रेणुकाजी तँ ओकर सबहक हिट लिस्टमे छलीह। उपस्थित मौगी सभ समवेते एक दोसराक संग पुरैत कहए लागए- देखियौ ने, भगवान पाइयक कोन कमी देने छथिन? मुदा ओ ने कोनो चीज खरीदैत छथि आ ने महग कपड़े लत्ता पहिरै छथि आ नै कोनो किट्टी पार्टी ज्वाइन करैत छथि। देश परदेश घुमबाक तँ नामे नै लैत छथि। आ अहाँ आइ धरि हुनका कोनो गहना किनैत देखलौं?

-हमर आन मालकिन सभ हमरा बड़ चिढ़बैए जे तोँ रेणुका मालकिन लग कोना काज कऽ लैत छँ? ओ तँ मक्खीचूस छथि।

-पूरे कंजूस हम तँ लड़ि गेल रही लता मैडमसँ, नै भाभी?

-ओ तँ समयपर हमर दरमाहा चुकता कऽ दैत छथि। अओर हमरा मानबो बड़्ड करैत छथि, कहियो कोनो गलतीपर खिसियाइत नै छथि। व्यवहारमे बडड उच्च विचारक छथि हमर रेणुका मालकिन।

-देख गुड़िया, हमर वास्तविक गहना अछि एक बेटी आई.आई.टी. कानपुरमे, दोसर बेटा एम्स मे आ तेसर तँ संघ लोक सेवा आयोगक अभियंत्रण परीक्षा दऽ कऽ आवश्वस्त भऽ परिणामक प्रतीक्षारत अछि। हम सभ पाइ लगा रहल छी अपना तीनू संतानकँ सर्वोच्चपद पर बैसेबाक योग्य बनेबामे। ओकर ई ओहदा, उच्च शिक्षा, संस्कार, व्यवहार अपन माये-बाप नै समाज आ देशक नाम जगजियार करत। आ तखन हमर कोइखक ई तीनू मोती हमर सुन्दर गहना बनि हमरा सुशोभित करत।

डोपिंग टेस्ट

चित्कार!

-नै, नै, किन्नौ नै? नै मास्टरजी, हमरा नै चाही कोनो पदक। नै चाही बाप-पुरखाक, देशक इज्जति। हम, आ माय-बाप, सर-समाज सभ कल्पना करैत छलौं जे पदक तालिकामे हमर नाम सभसँ ऊपर आबए। मुदा कहाँ छलै ककरो ऐ सत्यक पता जे अहाँ नशामे सुइया दऽ पदक लेबासँ पहिने इज्जति लऽ लेबाक प्रयास करब। नै, हमरा नै चाही माय-बाप, सर-समाज, देशक इज्जति। हमर अपन इज्जति हमरे लग बाँचल रहए, ईएह जिनगीक सभसँ पैघ पदक हएत।

-तोँ डोपिंग टेस्टमे फेल भऽ अप्पन आ देश दुनूक इज्जति निलाम कऽ देमऽ।’

-हमरा ई मंजूर अछि। मुदा अन्तरात्माकेँ ठेंस नै पहुँचाएब गुरूसँ इज्जति गमा कऽ।

विनिमय

मोन गम्भीर, चेहरा उदास!

कत्तौंसँ कथाक स्थिर नै भेलापर बेटी बलही बोझ सन लगैत छनि। नै जानि कतको अनकट्ठल गप्प सुनि एलापर क्षणिक निर्णय कऽ लैत छलाह- जतए जेहने लड़िका भेटल हाथ धरा कऽ रहब ऐबेर।

मुदा जहन बेटीक सिरखारीपर नजरि जानि, तहन बेटाक समकक्ष बेटीकेँ रखबाक सपना दिनक तरेगन नहैत लागनि। स्कूल धरि पढ़ैबासँ इंजीनियरी करेबा धरि बेटा-बेटीमे तँ फर्क नै केलौं कहियो। तहन आब एकटा सहयोगी आ दोसर बोझ सन कोना भऽ सकैए।

-नै किन्नौ नै, एहेन-ओहोन घर नै बिआहब आ नै दब लड़िका करब, चाहे जतेक खर्च करए पड़ए।

-ऐं यौ, एतेक खर्च....। कतऽ सँ कऽ सकब?

-यै की करू? ईएह सभ जानि बेटा-बेटीपर एके रंग खर्च कऽ दुनूकेँ सुयोग्य बनेलौं। जे बेटा बुढ़ारीक लाठी बनि पितृऋणसँ उऋण हेबाक लेल जीवनक सहचर बनि चलत। आ बेटी... सेहो आत्मनिर्भर रहत। हम सभ एकरा सभकेँ आधुनिक समाजक अंग बनाबऽ चाहै छी। यथा - परम्परासँ दूर आधुनिक रहन-सहन, आधुनिक सोच माने कि दहेजमुक्त समाज, सुशिक्षित परिवार ... आदि।

-मुदा लड़िकाबला सभ से नै करऽ देमऽ चाहैए! मजबूर करैए परम्परे निवहताक लेल।

-ऐं यौ, ऐ बदलैत वैश्विक परिवेशमे परम्पराक निवहता कोना कऽ सकब अहाँ?

-'बेटा बिआहक दहेजसँ बेटी बिआह संपन्न करा कऽ।'

(घर-बाहर जन. मार्च '१२)

सेजौट

पाकिस्तानक कूटनीतिक उठापटकसँ त्रस्त भारतकेँ चीन द्वारा अरूणाचल प्रदेशक अपन क्षेत्रमे घुसपैठीसँ भारतीय अधिकारीमे औनाा-पथारी शुरू भऽ गेल। मंत्री सबहक बयानबाजी, पक्ष-विपक्षक कुकुर कटाउज चलैत रहल। अमेरिका सेहो चीनक सामरिक शक्तिसँ डराइत रहल अछि। मुदा ओकर टांग अड़ौव्वल कुचालि सोझाँ आएल- चीन द्वारा भारतक कोनो हिस्सापर अतिक्रमण एक अनुचित दखलंदाजी मानल जाएत।

अमेरिका ऐ तरहेँ गोइठा सुनगा कऽ मुँह दोसर दिस घुमा लेलक। चीन ऐ मुद्दाकेँ गरमा, ऐ मुद्दाक गरमीपर निश्चिंत भऽ सूति गेल। भारतक प्रधानमंत्री कार्यालय, रक्षा मंत्रालय आ विदेश मंत्रालयमे उकस पाकस होइत रहल।

परिणाम शून्य सन।

भारतीय अधिकारी चीनक दोसर कुचालिकेँ अखियासैत प्रतीक्षारत रहल।

ऐ बेर तँ भऽ गेल। आब.......... किछु कऽ कए देखाबथु........। किन्नौ नै छोड़बनि चैन सँ रहऽ देबाक बाट।

परमेश्वर

करमान लागल लोकक बीच पंचैती शुरू भेल।

पहिल पुरुष पंच- अइ छौंड़ा-छौंड़ीकेँ तँ भकसी झोंका कऽ मारि दिअ। छोड़ू नै। ई प्रेमक नामपर सगरो समाजकेँ कलंकित केलक अछि।

दोसर पुरुष पंच- नै, एकरा ऐ पड़ौआ छौंड़ासँ मुक्ति दिआ बिआहि दिऔ। कोनो लुल्ह, नाङर, घेघाह वा कनाहसँ अपन कुकर्मक सजाए एतै भोगि लेत ई।

मौगी पंच- ऐ उढ़री-ढ़ररीसँ कोन गामक लोक बिआह करत? एकरा तँ तरहड़ा खूनि गाड़ि दिऔ।

ऐ घोंघाउजक बीच छौंडीक कुहरल आवाज आएल- हम अहाँ सबहक पएर पकड़ै छी। हम उढ़री नै छी। हम एकरासँ प्रेम करै छी। हमरा जे चाही से सजाए दिअ। मुदा हमरा सभकेँ जिनगी दिअ।

आ चोट्टे मुखिया जी छौड़ी माएकेँ बजा कहलखिन्ह- लिअ, एकरा झोंट पकड़ि लऽ जाउ आ बान्हि राखू।

तखने सभ पंच समवेत स्वरे बाजल- मुखिया जी, अपने तँ परमेश्वर छिऐ, तखन फेर एकर सजाए- बस एतबे।

मुखिया जी बजलाह- नेतृत्वक काज छै जे जँ कतौ पसाही लागल देखए तँ ओइमे पानि ढ़ारि दै नै की घी।

पजेबा

रामसेवक छल निसंतान। तँए दर्जनो देवता-पित्तरकेँ सुमिरलक ओ। निहोरा पाँतीसँ लऽ कऽ कबुला-पाती धरि केलक। खाली उद्देश्य एतबे जे कनियाँक सुन्न कोरा भरै।

आ दुनियाँमे भगवान छथिन्ह तकर सबूत भेटलै रामसेवककेँ। मुदा तैओ मन्हुआएल छल ओ।

-यौ, घरमे लछमी अएलीहए। भोज-भात हेबाक चाही।

लाल भाइक ई गप्प सबहक देहमे जेना टेमी लेसि देलकै।

-यौ लाल भाइ, अहूँ घापर नून किए छिटै छी?

लाल भाइ बातकेँ गमैत बजलाह- हम तँ बेटाकेँ पढ़ेबा-लिखेबापर ओतेक खर्च केलौं। मुदा ओ विदेशमे जा बसल। फोनेपर भेल गप्पक अलावे हमर सबहक कोनो सुधि नै छै ओकरा। हमरा सभकेँ मुइलाक पछाति लगैए दोसरे कर्ता बनत या नै तँ लहास सड़ैत रहत। आब अहीं सभ कहू जे एहन बेटाक जरुरते कोन?

लाल भाइ ई कहि चुप्प भेलाह।

सफाई

-गै सुनीता। हे सुन। तोरा रखलियौ बासन, लत्ता आ घरक सफाई वास्ते, ऐ दुआरे नै जे अपन चारू बच्चाकेँ ढंगेरने ला, आओर पुरे घरकेँ अजायबघर बना कऽ राखि दे।

-दुनू बेकती रह एकठाम, कोनो बात नै। मुदा नियंत्रण राख अपना पर।

-देख तँ हमरा, एकटा बेटी अछि बस।

-यै मालकिन, हम सभ तँ माय-बाप जकरासँ गठबन्धन कऽ देलकै, एकेटा लग रहि जतेक चाही जनमबै छी। आ जे किछु करी, पालनो-पोसन कऽ लै छी। मुदा अहाँ सभ नै जानि जे ककरा-ककरा लग जा रंग रभस कऽ अबै छी। हमरा जनतबे तँ अहूँ नै जानि पबैत हएब जे अहाँक बच्चाक असली बाप के अछि?

-हे चुप्प! हमर सोसाइटी देखै छें।

-हँ मालकिन, अहाँ सभ कतेको पुरूषक गात लागि अबै छी सोसायटी मेन्टिनेसक लेल। वापिस अपन घरमे आबि अपनाकेँ सभसँ पैघ सतबरती देखबै छी।

प्रिमियम

-कहू तँ, छः हजार टाका पठबैत छी ऐ छओंड़ा कँ। तखन फोन करत जे आइ ई खर्चक पाइ चाही तँ काल्हि ओ फीस देबाक अछि। पाइ पठा दिऐ। एतेक पाइमे तँ हम पूरा परिवार एतऽ गुजारा कऽ लैत छी। मुदा ओ सदिखन खगले रहैत अछि।

-यौ की करबै, कहुना डिप्लोमा डिग्री पाबि लिअए जइसँ नोकरी सुरक्षित भऽ जाए। हैं यै, हमरो सएह मोन अछि। हम कहुनाकँ तँ ओकर खाँहिस पूर्ति कइये ने देबै।

-हमर बाबूजी डेढ़ सए टाका मासमे पठबैत छलाह। ओहीमे सभ खर्च चला कऽ कहियो काल सिनेमा देख लैत छलौं। कहियो दोबारा पाइ मंगबाक खगता नै बुझाएल।

-यौ, अहाँ कोन डिप्लोमा डिग्री केलौं, से ने कहू। डिप्लोमा डिग्री केला मात्रे किछु नै होइत छैक। देखै छिऐ, हमर सबहक जतेक पेंशन अछि ततेक तँ अझुका लोकक दरमाहो नै भऽ पबै छै। यौ, पेंशनक पछातियो उमेर खसलासँ आश धिये पूताक होइ छै, से नै बुझै छिऐ।

-है यै, तँ ने मासे-मासे पाइ भरै छी। जे ओकर बदला चुकबैत रहए, जिनगीक संग आ जिनगीक पछातियो।

मुखियैती

विद्यालयमे मध्यान्हमे भेल पलखतिमे नेना सभ खेल खेलेबा लेल अपन-अपन तुरियाक धिया-पुताकेँ संगोर केलक। -गै कंचन, तूँ तावत बौआकेँ देखैत रह, पड़ा नै जाउ। रूची आ लाली, तूँ जो घास लऽ गायक नादिमे खसा आ, भोरेसँ भुखाएल हएत बेचारी।

-रौनक आ सत्यमकेँ तावत तूँ झूला झुला दही।

-हम सभ कोनो काज नै करबौ जावत हमरा सभकेँ किछो देमऽ नै।

-रुक....., हम तोरा सबहक लेल किछु चीज लऽ कऽ अबै छी।

-ले गै लाली, रूची बिस्कुट। रौनक सत्यम लोली पॉप। कंचन तूँ सभ सोन पापड़ी लऽ ले।

-तोरा अपना लेल तँ किछु नै बचलौ .... रौ।

-कोनो बात नै, तोँ सभ खुश रहमे तँ हमरो खुशी हएत।

- ईह! नान्हिटा छओड़ा, कहैए कोना जेना हमरा सबहक बाबा रहए।

लक्ष्य

-गोत्र.....। गोत्र नै, हमरा लेल तँ सउत्र अछि।

-हम तँ बुझै छी जे हियासँ हिया मिलि गेल तँ शेष फोंक।

-मुदा हम अहाँ तँ विजातीय छी, तहूमे छोट-पैघ जातिक।

-नै यौ, हमर अहाँक प्राकृतिक जाति एके अछि, मानव जाति।

-ओना तँ प्रेम पशु-मानव आ मानव-पशुक बीच सेहो होइत अछि। मुदा ओ निमित्तिक लेल होइछ। वैचारिक प्रेम तँ मानव-मानव मात्रक बीच होइछ।

-अओर स्त्री-पुरूषक बीच भेल प्रेम सांसारिक संपूर्णता भऽ स्थापित होइत अछि।

-आब अहीं कहू जे अहाँ हमरासँ कोन प्रेम करै छी?

-निमित्तिक की वैचारिक?

-यौ, हम अहाँसँ एहेन प्रेम मात्र चाहै छी जइसँ हमर माथानूआ भऽ जाए।

(जखन-तखन, प्रेम कथांक)

कौनचर

“मिडिया तंत्रमे उल्टा-पुल्टा देल मौखिक बयानक हम भर्त्सना करैत छी, भारत हमरा पर्याप्त सबूत दिअए तँ हम दोषीपर कार्रवाइ अवश्य करब।”, पाक विदेशमंत्रीक बयान आएल।

-हम पहिने पूर्ण सबूत पाकक समक्ष प्रस्तुत कऽ चुकल छी। पाक एखन धरि ओइपर की कार्रवाइ केलक, से कहए?

-दुनू देशक राजनयिक वा प्रतिनिधिक बयानबाजी कुकुर कटाउजसँ वेशी किछु नै छल।

दुनू देशक जनता अइ कटाउज पर बहीर आ आन्हर सन लगैछ। अपना टा बुत्ते दुनूमे सँ कोइ ठाढ़ हेवा योग्य नै अछि।

आब सबहक नजरि दुनूपर कान पथने महाजन अमेरिका पर छै।

भारतीय राजनयिक- ई हमर आपसी मामिला अछि, ऐपर कोनो तेसर देशक हस्तक्षेप हम किन्नहुँ बर्दाश्त नै करब।

पाक सामरिक शक्तिकेँ आर्थिक मदति वास्ते अमेरिका दू सौ करोड़क पैकेजक घोषणा करैत कहैछ __भारत, पाक आतंकवादसँ ग्रसित अछि। ऐ दुनूक बरोबरि सहयोगक आशा अमेरिका रखैछ।

भारतीय राजनयिक असहाय महिला जकाँ छटपटा कऽ मुँह बन्ने रखैछ किएक तँ उहो मुँह बौने अछि ओही महाजनक कारा वास्ते।

साँप-सीढ़ीक खेल चलैत रहल।

आत्मानुभूति

सर्वोच्च न्यायालयक समलैंगिक सबंधक मान्यताक घोषणा सँ निन्जा आ डोल्फीक जोड़ी आइ वेशी उल्लसित भऽ उठल छल। छात्रावासक ओइ महिला, छात्रा जोड़ीक हर्षित मोन कतेको विषम लिंगी जोड़ीक कटाक्षक शिकार होइत रहल।

ऐ जोड़ी द्वारा स्थानीय गिरजाघरमे जीवन पर्यन्त संग-संग जीवाक सप्पत लेल गेल छल। जे किछुये मास पछाति लुत्ति भऽ उड़ैत देखाएल।

छात्रावासक प्रभारी सहित अन्यान्य छात्र-छात्राक भेल जुटानक सोझाँ ऐ जोड़ीक एक संगी निन्जा चित्कार पाड़ि रहल छल-

-नै, किन्नौ नैं। हमरा छोड़िदे। नै चाही गॉड, नै चाही स्वर्ग।

प्रभारी जी पुछलनि- की चाहियौ तोरा, से ने बाज?

-हमरा चाही जीवन!

-जीवन, माने ....?

-माने जे मर्द, जीवनक संपूर्णताक खातिर।

जनवाणी

दर्जनों कविक सोझाँ दर्शक कविगोष्ठीक आनन्द एना उठा रहल छल जेना कवि सभ हुनकर सबहक सभ आस अपन-अपन कविते सँ पूर कऽ लोककेँ गुदगुदी कऽ रहल छल। रातुक पहिल अधरतिया धरि तँ उपस्थित श्रोता हँसैत-हँसैत बिता लेलक। लेकिन राति जेना-जेना बितैत जा रहल छल, श्रोतामे हास्य रसक अनुभूति कम भेल जा रहल छलै। आ ओ सभ अपन-अपन कुर्सीयेपर बैसल ओंघए लागल छल। जकर मुख्य कारण छल जे कवि सबहक कविता आब हास्य व्यंग सँ आगू बढ़ैत अपन परम्परागत रूप यानी रोटी आ भूख दिस धूमि गेल छल।

संचालक आ आयोजक दुनू गोटे कनफुसकी केलक आ मंचसँ उद्घोषणा भेल- आब अहाँ सबहक सोझाँ आबि रहल छथि अपन जमानाक नामी हास्य कवि श्री आजाद जी। मुदा आजाद जी केँ कविता सुनेबासँ पहिने हम ओकर अवलोकन करऽ चाहब जे कि हुनक कविता हास्ये-व्यंग्यक कसौटी पर ठाढ़ भऽ पाओत कि ओ जगैत श्रोताकेँ गुदगुदी करबाक आ सुतैत श्रोताकेँ जगेबाक काज कऽ सकत?

आजाद जी ठाढ़ भऽ हाथ जोड़ि माइक पर जा कहलनि- हम आयोजक आ श्रोता दुनूसँ माफी चाहब, किएक तँ हमर कविता हास्य-व्यंग्यक नै अछि। ओकर संबंध तँ पेटक भूख आ रोटीसँ जुड़ल अछि।

किछु जागल श्रोता जे हास्य मे रमल छलाह हो हल्ला मचाबऽ लागल, वापिस जाउ... वापिस जाउ।

मंचेपर सँ आयोजक महोदय आजाद जी केँ हुथैत कहलनि - आजाद जी, हम तँ अहाँकेँ वरिष्ठ कवि मानि ऐ दुआरे बजेलहुँ जे अहाँक नाम सुनि अधिकसँ अधिक श्रोता आबए आ हमर कमाइ दु गुणा भऽ सकए। परंच अपने तँ रंगमे भंग कऽ देलौं। सोझाँ देखियौ- कोनो श्रोता अहाँक घसाएल-पिटाएल कथानक, भूख आ रोटी, सुनबाक लेल तैयार नै अछि।

-हम सभ सुनबाक लेल तैयार छी। सभ सूतल श्रोता जगैत समवेत रूपेँ कविक स्वरकेँ बल देलक आ ओइ भीड़मे अपन-अपन कुर्सी ग्रहण केलक। आयोजक उत्साहित, गंभीर चकित होइत- अरे ई की?

श्रोता- हमरा सभकेँ भूखल पेटे निन्न कोना आओत सरकार! हम सभ सूतल नै छलौं, बोर भऽ ओंघा रहल छलौं।

-हास्य-व्यंग्य क्षणिक तृप्ति दैछ। ओ तँ धारक ओहन लहरि जकाँ अछि जे उठैत-खसैत रहैत अछि आ धार शान्त रहैछ। मुदा रोटी, ई तँ पुरे जिनगी दैत अछि। जे हास्य, रौद्र, भयानक सभ रसक सर्वग्राही होइत अछि।

चश्मा

एक टा चित्रकार बड़ मनोयोग पूर्वक एक टा आधुनिक पुरूषक चित्र बनौलक। शुट-बुट, हाथमे मोबाइल, कन्हासँ लटकल लैपटापकबैग आ आँखिपर चश्मा चढ़ल। ऐ चित्रक समीक्षा-प्रशंसा वास्ते लगा देलक म्युजियमक दुआरिक बाहर, आ कात मे ठाढ़ रहल परिणामक प्रतीक्षा मे।

किछु क्षणक पछाति एकटा दर्शक ओइ चित्रकेँ गौरसँ उपरसँ नीचाँ धरि निहारि कऽ बाजल - बड्ड सुंदर। जे कियो एकरा बनेलनि ओ धन्यवादक पात्र छथि। मुदा ई अओर सुन्नर होइत जँ आँखिपर चश्मा नै चढ़ल रहैत।

कातमे ठाढ़ चित्रकार उत्सुक होइत पुछलनि- चश्मा चढ़लासँ चित्रमे विकृति आएल अछि की?

-हँ, लगैए आँखिक पानि जेना कम भऽ गेल हुअए।

चित्रकार खुशी सँ कुदि उठल। -अहाँ हमर सत्यकेँ पकड़लौं।

-माने?

चित्रकार स्पष्ट करैत - पानि सँ भरल आँखि बला लोक तँ ओल्ड मॉडल भऽ गेल। यानी बेकार सन।

-आधुनिक लोकक आँखिमे आब ओतबे पानिक बेगरता थम्हल छैक जते सँ ओकर खाँहिस पूर भऽ जाए।

उपहार

भाय दुनूक दू सोच। पहिल ऐय्याशी आधुनिकतावादी। मुदा दोसर संयमी, परम्पराक निवहतामे विश्वासी। पिता पुरे दार्शनिक विचारक। माय नैहरसँ सासुर धरि साक्षात देवी बुझू।

परोपट्टा भरिमे ऐ समन्वित विचारधाराक सोरहा छल। जे भरल-पुरल परिवारमे बुधिगर ठेकनगर, परोपकारी जन हितैषी, नै जानि कतेको एहने मौखिक सम्मानसँ सम्मानित छल ई परिवार।

आब खगता भेलै परिवारक दोसर पीढ़ीक संपूर्णता आ तेसर पीढ़ीक हेतु सीढ़ीक। घोषणा कएल गेल- दुनू एके लग्नमे बेटाक विआहबाक।

नीक कुलशील आ समकक्ष, समदर्शी कनिया ताकल जाए लागल।

धरड़ोहि लागि गेल कनियागतक। सभ अपन-अपन बेटीक सुन्दर बखान वरागतक सोझाँ रखलनि। कतेको दर्जन कान्यामे सँ दूगोट कान्याक चयन कऽ दुनूटा घर बसेबाक दुआरि खोलि देल गेल।

दुनू कनियाँक एके दिन भेल द्विरागमनक आइ सोरहम दिन। स्वर्गसन परिवारमे नरकक बाट खूजल- दुनू कनियाँ झोँटा-झोँटौव्वल ...राँड़ी-बेटखौकीक मध्यमे खोललनि भिन भिनौजक बाट।

जेठकी कनियाँक उलहन उपराग सुनैत कान-आँखि मुनने रहली छोटकी। किएक तँ जेठकी जमीन्दारक बेटी, छोटकी कुलीन मुदा गरीब परिवारक बेटी।

जेठकी कनियाँ - हमर बाप माय तँ एक दिस पाइ आ दोसर दिस वर तौलि अनलनि। आ द्विरागमनमे देलनि कतेको पीढ़ी धरि घर सम्हारबाक जोगार लेल पेटार।

छोटकी कनियाँ- हमर माय बाप देलनि कुलीनक संस्कार जे अबबला कतेको पीढ़ी धरि निवहता करबाक शालीनताक पाठ पढ़बैत रहए।

काँट

बाप रे बाप.... बाप रे बाप, गीदड़ लऽ गेलै बौआकेँ। साँझ खन बाध बोनसँ घूमि रहल चरवाहाक भीड़मे सँ बफाड़ि काटि रहल एकटा चरवाहाक ई स्वर गूंजि रहल छलै। जे जेम्हरे सुनलक से एक-दोसराकेँ कहैत दौड़ि पड़ल खड़बोना दिस।

ता जीतन राम सेहो परीक्षण बाबूक ओतऽ दौड़ल जाइत रहए कि रस्तेमे परीक्षण बाबू बन्दुक लऽ अबैत भेटि गेलखिन। मालिक....। हँ हँ हम बुझलियौक। चल-चल। आ सभ खड़बोनाक चारूकात ठाढ़ छल कि जीतनराम चिचिया उठल- हैया यौ मालिक ईएह हमर कंटीरवी छी। मारू गीदरकेँ।

-कंटीरवी... , ई शब्द जेना परीक्षण बाबूकेँ वाण सदृश भेदि देलक, ओ तमतमाइत बाजि उठला- रौ स्सार। अही कंटीरवी लेल भरि गामकेँ जुटएलेँ तोँ। हम तँ बुझलियौ जे बेटा छौ?

(भारती मंडन- १९९५)

ओकाति

हाकिम, किरानी आ चपरासी कार्यालयमे डयुटीपर।

-सर! दरमाहा तँ बन्न अछि, मुदा घरक खर्ची नै बना अछि। आइ छोटकी बेटी बिमार पड़ि गेल। डाक्टरसँ देखेलिऐ। मुदा हाथपर एकोटा पाइ नै अछि, जँ किछु मदतिमे दितौं तँ उपकार मानितौं। - किरानी अनुनयात्मक स्वरे बाजल छल।

-हौ, हमर दरमाहा तँ चालू अछि मुदा कर्ज बलही बोझ सन। पाइ की हाथ पर एको दिन रहऽ पबैए।

-हूँह। ऐ सँ तँ नीक हम, जे सुखीसँ परिवारक खर्ची चला लैत छी। पहिल दिन तँ हाथ पसारऽ पड़ल अछि ककरो सोझाँ। सरकार! धन्य छिऐ अपने सभ। अहाँ अपने हाकिम, बेटा डाक्टर, फेर कर्जा। अहाँसँ नीक तँ बड़ा बाबू। जे अपन परिवारक खर्ची असगरे सुखीपूर्वक चला लैत छथि।

एक टा दबंग चपरासी बीचमे टपकि पड़ल- चुप्प रह, तोहर की ओकाति छौ? वेवकूफ कहीं के। हाकिम, हमर बेटीकेँ छात्रवृत्तिसँ ततेक पाइ भेटै छै जे अपनो पढ़ैए आ ओइ पाइमे सँ घरोक खर्ची चलि जाइ छै।

हाकिम दराज खोलि ओकर सेवा पुस्तिका ताकऽ लगला।

(मिथिलांगन- २००४)

जीवन चक्र

ओ कल्पित भावें उगैत सुर्यकेँ देखलक, तकर पछाति अपन दिनचर्यासँ निवृत भऽ अपन कर्मशाला (दोकान) मे लागि भिरल। गाँहैक केँ निपटाबऽ लागल छल कि उधारी लागब शुरू भऽ गेलै। सुर्य दिश तकलक- ओकर प्रखरता मलिन होइत बुझेलै। ओकरा काल्हि भोजन रूचिगर लागल रहै, मुदा आइ ओइपर अरूचि पसरि गेलै। सुर्यपर नजरि गेलै, ओ पश्चिम भर जाइत बुझेलै। महाजन एलै-गेलै।

गँहिकीक मन्दी, तगेदापर तगेदा आबि गेलै। अनट-सनट गप्प सुनबा लेल कान खुजल छोड़ि देलक।

गल्ला खोललक तँ नजरि अन्हरा गेलै। सुर्य बिला गेल छलै। चिन्तनशील, मुदा मध्यपानक चाह जोर पकड़ि लेलकै। बन्न भऽ गेलै दोकानक सभटा पट्टा।

राति अमावश्याक छलै।

रक्षक

राजनेताक सुसज्जित पण्डालमे करमान लागल लोक।

सत्ताधारी दलक बड़कासँ छुटभैया नेता धरि माइकपर अपन-अपन स्वतंत्र विचार व्यक्त कऽ रहल छला। सभक अभिव्यक्तिक केन्द्र विन्दु छल - 'महिला दिवस'। बीच-बीचमे मौगी सबहक समवेत स्वर- 'सभठाम हमरा सभकेँ ३३ प्रतिशत आरक्षण हुअए, आरक्षण हुअए... आरक्षण हुअए। कामकाजी महिलाक सुरक्षा हुअए, सुरक्षा हुअए... सुरक्षा हुअए । माइकपर सँ आश्वासनक स्वर फुटले रहै कि चारू कातक भीड़ एक दोसराकेँ थकुचइत पड़ाए लागल। पण्डाल नै जानि उखड़ि कऽ कतऽ गेलै। क्षणेमे मंच सहित संपूर्ण मैदानमे सन्नाटा पसरि गेल। सभ नेता निपत्ता भऽ गेल। लोक सभ अपन-अपन घर पड़ाएल।

की भेलै से बुझवा वा बुझेवा लेल किओ उपस्थित नै।

संवाद तँ लोककेँ साँझखन प्रसारित आकाशवाणीक समाचार ''महिला दिवस पर आयोजित सम्मेलनमे बुधिया आ चुनियाक सामुहिक बलत्कारक आरोपमे दु गोट वर्दीधारी गिरफ्तार'' सँ प्राप्त भेल।

जमाना

-बहुत राति भेल, बन्न करू आब गप्प। लाउ खेनाइ। हँ, एकटा गप्प तँ कहबे नै केलौं। आवश्यक हुअए तँ कहू। आ लगाउ खेनाइ। भोरमे जल्दी उठबाक अछि।

-कने शर्मा जीक जिज्ञासा कऽ अबितियनि।

-किए, की भऽ गेलनि?

-हुनकर जेठकी बेटीक अपहरण भऽ गेलनि।

-अपहरण भऽ गेलनि, की उड़हैर गेलनि?

-जाए दियौ जे भेलनि। आब की ओ समय छै जे लोक लोककेँ तकने फिरतै।

-मोन अछि, पछिले दिन अपना घर मे चोरी भेल तँ के सभ आएल छल?

-मात्र भोरूका चाह पिनहार, पेट पोसुआ सभ।

(पल्लव - फरवरी ९४)

निर्धन

कार्यालय सँ बहराइते मोन छोट भऽ गेल।

लगातार भोरेसँ कार्यालयक ड्युटी, फेर ऐ तिक्ख रौदमे जाएब मुश्किल।

'पण्डासराय' नाम सुनिते रिक्शाबला बाजि उठल- दस टाका लागत मालिक। दस टाका। रौद नै देखा दैए, केहेन जान मारूक छैक।

अपन जेबीकेँ तौलैत पएर आगू बढ़ा लेलनि किरानी बाबू- ओह। आइ जँ साइकिल रहैत?

परंच हएत कोना, परिवारक भरण-पोषण! ई तँ जोंक जकाँ चूसि रहल अछि।

-नै मालिक, सातसँ कममे नै जाएब।

चलबासँ असक्क भऽ जेबीक हालतपर चित स्थिर कऽ गाछक छाहरि तर बैस गेलाह।

-सभक एके हाल छऽ हौ? चारि टाका देबऽ, गरीबो कँ तँ ध्यान रखहक। कार्यालयमे ओम्हर हाकिम चुसैत छथि, घरमे परिवार आ सड़कपर तोँ सभ।

-देखै नै छिऐ, मँहगी कते बढ़ि गेल छै। चाउर अठारह टाका किलो छैक।

-तँ लूटऽ मिल मालिक कँ।

-मालिक, लूटल तँ हम गरीब जाइ छी, सड़कसँ संसद धरि। हुनकर सभक तँ खालियो गाड़ीकेँ सलामी बजैत छनि।

(मिथिलांचल संपर्क १९९७)

आरक्षित

सभ एक दोसराकेँ जिज्ञासा भरल आँखिये निहारि रहल छल। करमान लागल छलै लोकक, मुदा कियो ककरोसँ किछु पुछि नै पाबि रहल छल। आ ने कियो किछु बाजि रहल छल। खूब सुन्नर, लाल चमकैत साड़ीमे एकटा पुतला धू-धू कऽ जरि रहल छल।

"की भेलै? के छलै ई?", भीड़मे सँ एकटा मुँह खुजल।

-रौ फेकना, चल-चल, काज भऽ गेलौ।

-सर! मजदूरी?

-मजदूरी! एखन तँ काज शुरूहे भेलैए। आब चल राजीव चौक, पटेल चौक, बड़ा बजार।

-बड़ा बाजार?

ऐ चारि पाँच स्थान पर जखन मुख्यमंत्री क पुतला फुकेतै तखन ने आरक्षण विरोधी स्वर सत्ताधिकारीक नजरि मे जेतै।

-मुदा, सर! ऐ सँ अहाँकेँ की भेटत?

-नाम, पहिचान। अगिला चुनावसँ पहिने बना देल जाएब पार्टीक अध्यक्ष। आ तखन ओसुला जाएत एके बेरमे ऐ सभ पुतलाक पाइ। आ आरक्षित भऽ जाएत हमर कमाइ। आ तखन तोरो सभकेँ भेटि जैतौ स्थायी काज, अगुताइ किए छेँ?

-सर! आइक बोनि नै भेटतै तँ बच्चा सभ की खेतै?

-की खेतै? राति कहुना बिता लेतै, भोरेसँ फेर सभ लागि जइहेँ मजदूरीमे, जेना बोइन कऽ कए आइ धरि खाइत एलैँहेँ। रौ! कहियो आइ धरि पेट भरलैए बोनिहारक, जे आइ भरै कऽ गप्प करै छैं? सुन! तोँ सभ तहिया सोचिहेँ पेट भरै कऽ जहिया आरक्षित कऽ लेमऽ अपन मजदूरी।

-आ तहिया, अहाँ सभ की करबै?

-हम सभ कुरसीक रंग बदलि लेबै।

नवयुग

महिना रहै अषाढ़क, सावनक आगमन होमैएबला रहै। मुदा... । खेत सभ पनिया गेल रहै। रोपल नै रहै धान, भेल नै रहै कादो, मुदा... मुदा तैयो भुतिया गेल रहै खढ़ पात। हरकम्प मचि गोल रहै, गृहस्थ सबहक बीच। 'कोने रोग तऽ नै लागि गेलैए ऐबेर अइ माटि मे?', सभ किसान अर्जी केलक कृषि पदाधिकारी लग। खेतक माटिक भेलै परीक्षण। भेटलै संवाद, रासायनिक खादक बेशी प्रयोग जमीनकेँ कऽ देलक अछि खराप। एकर उपाय जनबाक जिज्ञासा गृहस्थ द्वारा कएल गेल तँ भेटलै सरकारी निर्देश। अहाँ सभ अपन-अपन खेतमे पुश्तैनी बीआ नै मात्र दोगला (हाइब्रीड) क रोपनी करू, तखने टा किछु फसिल पाएब।

-सर! एकर दामो तँ घरैया बीआसँ कतेक गुणा बेशी लगा कऽ पछिला बेर लेलौं, मुदा सभटा खखरी भऽ गेल।

-ठीक छै, सभ गृहस्थ अपन-अपन सभटा खेत राखि लिअ परती। गृहस्थ सभ भूखे मरू!

(मिथिलांगन २००८)

अवाक

-बचाउ, हे भगवान! , कहैत अपन दुनू आँखि मुनि लेने छल ओ। निस्तब्ध!

-केहेन माय छी अहाँ से नै जानि? बेटीक इज्जत लुटाइत देखिकऽ चुप्प चाप मुँह बन्न केने रहि गेलौं।

-की कहब हम आब समाजकेँ?

-बेटी, हम तँ तखन अवश्ये आँखि मुनि लेने रही, जे एखनो मुँह आँखि बन्न केने छी। चिचियाइत डर लागल, जे कहीं दुनू गोटेक जिनगीयो नै छीनि लिअए ओ वनमानुष सभ। गलतीये सोच सही, जीबाक अधिकार तँ रहए देलक ओ भेड़िया सभ। कहू भला आँखि बन्न करबाक सिवाय अओर हम कइये की सकैत छलौं? एखनो धरि स्त्रीमे ओ शक्ति कहाँ एलैए जे पुरूषसँ ऊपर भऽ सकैए, आइधरि स्त्रीक संपूर्ण शक्ति, जिजीविषा पुरूषेक मुटठीमे बान्हल अछि। आ मौगी जाबीमे जकड़ल मुँहे रहैए।

लिलसा

कएक दिनक वर्षाक जबकल पानिसँ कजरिया गेल रहए सौंसे अंगना। ओइ कजरिआएल पजेबा सभपर पएर दऽ चलबाक हिस्सक पड़ि गेल रहै सबहक। बाप रौ.... शब्दक चित्कार सुनि बेरा बेरी सभ दौड़ल अंगनाकेँ, कि देखैत अछि निमिषक माय बेहाश पड़ल छथि, सौंसे देह पानिसँ भीजल आ हाथ पएरमे कजरी लागि गेल छल।

अस्पतालमे भरती करबाओल गेल। ‘‘एक्स रे सँ पता चलैत अछि जे हिनक पएरक हड्‌डी टूटि गेल छनि, पलस्तर करऽ पड़त’’, डाक्टरक सलाह छल।

‘‘बाबूजी, निमिषाक माँ अंगनामे खसि पड़ली, हुनक पएरक हड्‌डी टूटि गेलन्हि अछि। एतऽ तुरन्त डाक्टर उपलब्ध भऽ गेलाह, इलाज चलि रहल अछि। अहाँ, हिनका सभकेँ कहै छलौं गामेमे रहऽ देबाक लेल कि पाइयो खर्च केलापर डाक्टर उपलबध भेनाइ निश्चित नै छल।’’

‘‘बौआ हम फेर कहै छी जे आबो गामेमे आनि लियौन। जँ गाममे रहितथि तँ कजरिआएल पजेबापर खसबे नै करितथि। डाक्टरक प्रयोजने कोन?’’

खानदानी

-अहाँकेँ एतेक मना केलौं परंच नहिये मानब अहाँ, तँ जाउ, लेकिन रौद बड़ कड़गर छै, बचिये कऽ रहब। नै तँ....।

-भैया, विभिन्न प्रकारक सांस्कृतिक कार्यक्रम छै स्कूलमे। हे उद्घाटन सत्र तँ बेजोड़ हैतै, की कहू... एकदम धमगिज्जर। अहूँ एबै ने भइया?

हम मौन रहि गेल रही। लाउडीस्पीकरक अवाज, ओइपर विभिन्न वाद्ययंत्रक पें... पो... आ शिक्षा मंत्रीक भाषण। हमर सबुरक बान्ह तोड़ि देलक। विदा भेलौं स्कूल दिस।

विद्यालयक प्राङनमे पएर रखिते हमर शरीर थरथरा उठल। समवेत स्वरे नेना सबहक ई गायन सुनि- आवारा ..... आवारा..., चोट्टहि घुरि गेलौं घर दिस। मोनमे उमड़ए लागल- ‘‘कि ईएह थिकैक स्कूली सांस्कृतिक कार्यक्रम आ ईएह दैत छथिन्ह गुरूजी शिक्षा। वाह रे भविष्य।

दोसर दिन गुरूजीकेँ शिकाइत कएलापर उतारा भेटल- जे जेहेन धरनदार छै तेहने तैयारीयो रहैत छैक। आ अहूँ सभ की करै छिऐ? हम सभ तँ प्रोत्साहन दैत छिऐ।

(विदेह अंक- ६२ मे प्रकाशित)

कुल्हइया

-चुप्प रहै जाउ, चुप्प तँ होउ। अहूँ सभसँ अनुरोध जे कृपया शान्ति बना कऽ राखू।

मंत्री जी, करमान लागल लोकक बीच अपन भाषण निर्बाध गतिये चालू रखने रहलाह। -अहाँ सबहक दुख आ दरिद्रताकेँ हम नेनेसँ अनुभव करैत एलौंहेँ। पहिल बेर तँ अवसर भेटत अहाँ सबहक कुल्हइया समाजकेँ ऊपर उठेबाक। अहाँ सभ एकजुट भऽ हमरा जिता दिअ, हम सप्पत खा कऽ कहै छी, अहाँक सम्पुर्ण कुल्हइया समाजकेँ जे कतेको सए बरखसँ पिछरल अछि, उद्धार कऽ देब।

-हाकिम, हमर सबहक पुरखा एतेक पछुआएल कहाँ रहै। पिछाड़लक तँ सत्ता, हमरा सभकेँ। दरअसल हम सभ सत्ताक शिकार बनलौं मुगल कालमे। कहै छलै हमर बाबा। हमर पुरखा जुम्मन शाह जे पहिने जमुना छलै। मोगल बादशाह सभ हट्टा कट्टा शरीर देखि ओकरा कुरहड़ि थमा देलकै। छीनि लेलकै जमीन-जायदाद आ ठाठ बाट। कालान्तरे ओ भऽ गेलै कुरहरिया। अपभ्रंशमे लोक कहऽ लगलै- कुल्हइया। यौ बाबू, हमर सबहक कोनो जाति आ मजहब नै छल। हमर पुर्वज पेट भरै लेल झारखण्डमे जा मोगलक आदेशे मुण्ड कटैक (बलि) काज केलकै तँ ओ कहेलै जनजाति मुण्डा। हम सभ मिथिलांचलक कोशी पेटमे समैल एतेक पिछड़ि गेलौं जे आइयो मजदुरीसँ उपर नै सोचै छिऐ। उपरी शिक्षा आ हाकिम- हुकूम तँ जगलेमे देखल सपना बुझू। बाबू, अहाँ सभ मोनकेँ जते भरि दी, पेट कियो भरनिहार नै। पेट भरतै, तखैन ने दुनिया सुझेतै। पेट रहै छै खाली, जिनगी देखाइत छैक अन्हार। सपना तँ संजोगले संग चलि जाइत छैक। यौ बाबू, कि रंग-रंगक हमरा आरी जिनगी बितवै छिऐ से अल्ले-मियाँ टा बुझैत हेथिन। अहाँ अओर कि जानऽ गेलिऐ? अहाँ अरू तँ गरीबकेँ भोटक साधन मात्र बुझै छिऐ, गरीबक जिनगीकेँ नै। सत्ते कहै छी, जहिया अहाँ आरू गरीबक जिनगीकेँ बुझबै, कुरसी तँ ओकरे दुरखा लागि जेतै।

दानक बौस्त

जाइ जाउ, जाइ जाउ। अहाँ सभ घर घुरू, बरियाती सभ आबि रहल अछि, खाइ लेल। बिजो भऽ गेल हैं, एम्हर बैसै जाउ .... ओहो ओसारा तँ खालीये अछि, चलू...।

कोबरा घरक ओसारा दिस बरियातीकेँ बढ़ैत देखि, लाल कक्काक ध्यान कोबरा घरक खुजल केबाड़ दिस गेलनि।

अपन हाथ बाझल रहनि तँ ममताकेँ कहलनि __हे, कने झटकि कऽ जा आ कोबराक पट्टा बन कऽ दहक। जुआन ममताकेँ बरियातीक उपस्थितिमे आंगनमे उतरैत सरियाती सभ चारू भरसँ अपन-अपन विचार देबऽ लगला।

ता ममता कोबर घरक केबाड़ ओंगठा, फेर भण्डार घरमे बैसल लाल कक्का लग चल गेल, मुदा ब्रम्हदेव बाबूकेँ आगि लेस देलकनि, कहलनि- कोबर घर खूजल छल तँ कोन जुलूम भऽ गेलै, हम कन्यादान कऽ उत्तीर्ण भऽ गेलौं। आब सभटा छार-भार बरियातीये सभपर। मुदा ऐ कुमारि जुआन-जहानकेँ जे बरियातीक सोझाँ टहलाबै छी से उचित नै।

सभ बिरयाती ठहक्का मारलक, -जखन जुआन भइये गेली तँ कतेक दिन रखबनि खुटेस कऽ। एकटा आर दान कऽ पुण्यक भागी बनू।

जुनुन

आतंकवादसँ प्रभावित क्षेत्र।

राति सुतबा काल घरमे बेटा आ माय।

बेटा मायसँ कहैत अछि- माँ ई बन्नुक अहाँ कोठीक दौगमे किए रखै छी?

-मानवक रक्षाक लेल।

-जँ ई मानवक रक्षार्थ अछि तँ एकरा मानवक संग रहबाक चाही।

-नै बेटा, ई मानवक रक्षा ओकर प्रयोजन कालमे करैत अछि। ताधरि ओ दुरे रहए तँ मानव स्वयंकेँ बेशी सुरक्षित राखि पबैए।

-माँ, जँ बन्नुक मानवक रक्षा करैए तँ मानव सभ की करैए?

-ओहो सभ बन्नुक मात्रकेँ सिरमा लग लऽ सुतैए।

माय निसभेर! मुदा ओ सोचि रहल अछि- अपन आ समाजक रक्षार्थ!

अधरतिया.........। आंगनमे भेलै पएरक आहटि, घरक दोगसँ हुलकी दऽ देखलक, साकांक्ष भऽ उठल निसभेर माय चौकलि, निन्न उड़ि गेलै।

बन्नुकसँ निकलल एक-एक गोलीक चमकपर शोणिताएल लहास चमकि उठै। गौंआ सभ बन्नुक लऽ घरे-घरे घुसल रहल अपन रक्षार्थ।

(वैदेही - जुलाई ९५)

विजेता

पाटीक बैसार प्रारम्भ भऽ गेल रहए। अग्रिम पंक्तिमे वर्तमान, निवर्तमान अध्यक्ष अपन-अपन समर्थकक संग अड्डा जमौने छलाह।

-सुनै जाउ.... ध्यान दियौ। कुल सीट अछि- एक आ टिकटार्थीक आवेदन अछि- २७, सत्ताइसो सदस्यक साक्षात्कारें पूर्ण विवरण जनलाक पछाति एक गोट उम्मीदवारक घोषणा कएल जाएत।

-यौ, ई तँ पिछला बेर साइकिल पार्टीसँ ठाढ़ भऽ हमर पाटीक विरोध केने छल। -हे यौ किछु दिनक लेल चन्द्रशेखर जी कें प्रधानमंत्री बनेबा लेल हुनको पाटीमे सहयोगी रहल। दल-बदलू कहीं के।

-कानाफुसी बन्न करू...। शान्त! शान्त! एका एकी कऽ सभ अपन विवरण दिअ।

-नै सर! पहिने तँ ऐ बाहरी व्यक्तिकेँ ऐ पाँतीसँ अलग कएल जाए। ई रामेश्वर यादव तँ दल बदलू अछि। पक्का दल बदलू यानी पूर्ण स्वार्थी।

-रामेश्वर जी!

-जी सर!

-अहाँकेँ हमर पाटी कोन आधारपर टिकट देत? अहाँकेँ हमरा पाटीमे एवाक की उद्देश्य?

-सर! हम चाहे कोनो पाटीमे जाउ, हमर एक मात्र उद्देश्य रहैए - ई कुर्सी प्राप्त केनाइ। आ आब पाटीयो तँ अहींक मात्र बाँचल अछि, जँ अहाँ सभकेँ हमरा प्रति एतराज हुअए तँ कोनो बात नै अछि, हम निर्दलीय भऽ चुनाव लड़ि लेब, से कोना मना कऽ सकैत छी अहाँ। सर! सभटा इलम जनै छी हम.... कुर्सी पएबा लेल। पएर पकड़बासँ खुन बहेबा लेल तक सक्षम छी हम। टाकाक तँ कोनो कमिये नै। हमरा टिकट देबाक अर्थ भेल- अहाँक एक सीट पक्का।

-सुन्दर, अति सुन्दर। अहाँ चयनित भेलौं।

हरियर बत्ती- लाल बत्ती

“डरेवरीये (ड्राइवरी) सही, नौकरी तँ भेट गेल। पहिल बेर बहरेलौं गामसँ, केहेन सनगर नौकरी पड़ि लागि गेल, दरमाहा पाँच हजार। ओकर अतिरिक्त खेनाइ- पिनाइ मुफ्त। ठीके लोक कहै छल, गामक डरेवरीसँ पेट नै भरतौ, सभ दिन मालिकक बहिये भेल रहमे।”, सुन्दर लाल गामसँ बहरएबाक पछाति पहिल पत्रमे गामपर सूचित कएने छल।

हिनके बुढ़वा-बुढ़िया खातिर तँ गाम छोड़लकै, नै तँ केहेन बढ़ियाँ दूनू बेकती गामेपर कमा लैत रही, पेट काटि किछु बलू बचाइयो लैत रही।

-हेलो....। रामसागरसँ गप्प करा दिअ।

-लाइने पर रहू.....।

-हेलो .... के छी?

-हम छी अहींक सतवरती।

रामसागरक गाममे ककरो अंगना जा, कोनो मौगी मेहरिसँ गप्प करैत रहलापर जँ ई प्रतिरोध करए तँ राम सागर खिसिया कऽ कहै - सतबरती कहीं के।

-हे दुख नै करब, फुरसतिक अभावमे छः मास सँ चिट्ठी-पतरी नै लिख सकलौं।

-ऐं .... आब की चिट्ठीक जमाना धएल रहलै? लौ ई फोन नम्बर, फोन करैत रहतै, जेठका भइया मोबाइल लेलखिनहें।

साल भरि बीत गेलै। नै कोनो चिट्ठी आने कोनो फोन एलै। हँ, बीच-बीचमे हजार दू हजार टाका जरूर आबि जाइ छलै।

-माँ यै....., हमर मोन दू-तीन दिनसँ कोना दन करैए ओकरे पर सदिखन ध्यान लागल अछि।

-हूँ यै, किछु भऽ तँ नै गेलै छओंड़ा के?

-धुर, माँ ओहोन कठगर हाड़, माउसबला देह हइ, की हेतै ओइ शरीरकेँ।

-माँ यै, हमरा तँ शक अछि ओकर मोनपर। छुलाह तँ छले, कहीं मोन तँ नै भटकि गेलै?

-माँ यै, दुलरा काल्हि बम्बइ जाइ छै, ओ कहलक जे रामसागरक कोठी हमरा देखल अछि, जतए ओ काज करैए। ई कहथु तँ हम ओकरे संग लागि जाइ।

-हे भगवान! माय गै माय। केहेन चकेठे सनक देह छै, तै मे कोन बीमारी भऽ गेलै हे भगवान। डाक्टर साहएब, एकर कोन इलाज छै से कहू, हमरा जेना हएत हम एकर इलाज कराएब।

-सुनू घबराउ नै। गाम पर लऽ जाउ, जे कहथि से नीक-निकूत खाइ पीबै लेल दैत रहबनि।

-मुदा इलाज.....।

-एड्स लाइलाज बीमारी छैक।

लगाम

नारीक प्रकृति प्रदत्त कोमलांगी हेबाक कारणे पुरुष सदिखन ओकर मान मर्दन करैत रहल अछि। सभ रूपेँ। कोनो मानवीय मूल्यक ख्याल नै रहलै।

आब जमाना करोट लेलकै। पुरुष सभ बेसी निक्कमा होमए लगलै। आब एहन पुरुष सभ पुरुखाह कम कटाह बेसी भए गेल। मौगी सभकेँ रोजगार भेटलै। सभ शर्तपर रोजगार देल गेलै। मुदा ऐ अवसरकेँ पुरुष अपना तरहेँ भजौलक। तेँ आइ महिलाक सत्ताधीश होइते.... पुरुषे सत्ता चलबैए। आ मौगी सोझाँमे राखल मुरुत बुझू आ पुरूषकेँ पुजारीक भेषमे मालिक।

देखाउँस

कूकुरक समूह मनुखक बीच रहि मनुखाह भऽ गेल। ताकए लागल मनुखे जकाँ खान-पान आ ऐय्याशी। मनुख स्वभावे कुकुरक चालि अंगिऔलक। ओकर भोग-विलास आ ऐय्याशी तँ सनातनिए रहल। मुदा ओ परिवर्तन शीलताक चक्रमे ओझरा गेल। मनुख पहिने बरदासी छल। बेसी आक्रोश भेलापर घोंघाउज कऽ लैत छल। मुदा आब---- आब तँ छोटो गप्पपर कुकूरकटाँउझ करैत रहैए।

माँ

एतऽ हम-अहाँ, प्रेम-घृणा, परिवर्तन-रेवाज किछु नै बाँचल अछि। जन्म-मृत्यु, सुख-दुख सभ सुन्ना भेल जा रहल अछि। बाँचल अछि आ बचलो रहत तँ खाली ओ जे पेटमे नौ मासक दुखकेँ सहि सृष्टिकेँ पूरा करए बला जालक एकटा डोरि अछि। एतैसँ संतुलित आ संचालित अछि स्वर्ग-नर्क आकि पूरा ब्रम्हाण्ड। जकर एकसर बिन्दु अछि जन्मदात्री।

विजातीय

पूरा पहाड़ी पर शून्यता पसरि गेल छल। उपर मेघमे स्याहपन, बसातक साँय-साँय ऐ नव जोड़ीकेँ आरो बेसी मजेदार समयक आनंद दए रहल छल।

-यौ ठीके कहै छलिऐ। हम तँ एतेक दूर धरि कल्पनो नै केने छलौं जे पहाड़ आ बोन जिनगीकेँ एतेक खुशनुमा बना सकैए। आह, कतेक मजेदार क्षण। पहिल जे बिआह जिनगी दैछ। दोसर बिआहक दिन-राति ऐ सपनाकेँ ऐ प्रकृतिक कोरामे जीवनक संपूर्णताक अनुभव दए रहल अछि।

-हे यै... अहाँकेँ ई बुझल अछि जे समाजसँ चोरा कए कएल गेल बिआह आनंदक संग स्वर्गक बाट सेहो खोलिकेँ छोड़ैए। कोनो बात नै, हिया अहाँसँ मिलल। समाजसँ मिलए की नै मिलए, ओइसँ कोन फर्क पड़त। संग हम देब मुदा वास तँ समाजे देत। कोनो बात नै, समाज जँ जीबाक बाट नै छोड़त तँ ओइ क्षणकेँ अंतिम क्षण बना लेब। जइसँ सोहाग अचल रहि जाए। खाली अहाँ संग दैत रहू।

स्वरूप आ संभावना

एकैटा पाथर कतेक स्वरूप पबैछ आ स्वरूपक गुण पबैछ अपन महत्व। पाथरे ओछा कए बनैछ बाट। जकर स्वाभव होइछ लतमर्दन हएब। पाथरे जोड़ि बनैछ घर। जे लोकक जानक रक्षा करैछ। पाथरक टुकड़ीसँ बान्ह आ ने जानि कतेको प्रकारक लोक कल्याणकारी वस्तुक निर्माण होइछ। पाथरेक लोढ़ी-सिलौट या चक्की जीवात्माकेँ बचेबाक साधन बनि घसाइत रहि जाइए। पाथरेकेँ तरासि कए मूर्त रुप जखन देल जाइत छै तखन ओ दूध-फूल-अक्षत-नैवैद्यसँ पूजित होइछ। ईश्वरक प्रति आस्था रखनिहार लेल तँ हियामे नुका जाए बला ईश्वरक प्रतिरूप होइछ पाथर आ ओकरे पूजि-पूजि लोक सर्वस्व प्राप्तिक आशमे समर्पित भऽ जाइए।

विकल्प

देवता-पितरक नाम पर सभ एक-दोसरासँ अपनाकेँ विलगा लैए। मुदा चंदा मामा कतेको धर्मावलंबीकेँ प्रिय छथिन्ह जकर स्पष्ट उदाहरण अछि- चान देखलाक पछातिये होइछ मुसलमानक रमजान। चाहे ओ रोजा रखनिहार लोकक दृश्यावलोकनसँ होइ कि इमाम साहेबक घोषणासँ।

हम सभ तँ तिथियोसँ काज चला लै छी, जेना भरदुतियाक चान देखाउथ की नुकाएल रहौथ, हमरा सभ लेल धनि सन , हँ चौठचंद्र पावनि जे कि मिथिलेवासी द्वारा मनाओल जाइछ, मे चौठचंद्रक दर्शन अवश्य करै छी। आ पूर्णिमाक चानक निमित्त तँ देशक सगरो भागक लोक रक्षाबंधन मनबैछ।

चानक सौम्यता आ शीतलतासँ प्रभावित लोक एखन हुनक निमित्त मात्र पूजन करैछ। किएक तँ एखन जमीन आ असमानमे असीम दूरी अछि। मुदा जखने चान धरि पहुँचबाक रस्ता रहरहाम भऽ जेतै तखने लोक ताकए लागत ओइठाम जा कऽ जीबाक साधन। आ सभटा सुविधा होइते ओतौ एहिना उकवा उठतै। तखन लुंगी, धोती, पैजामा आ पैंटबला छेकत अपन-अपन जगह आ ओतौ दऽ देत सीमान। आ तखन एतौ पूजा छोड़ि हएत धमगिज्जर।

फेर तँ पूजित चानकेँ बँटबाक वा कटबाक लेल शुरु भऽ जाएत कटा-काटी। आ संगे-संग धूमिल भऽ जाएत चानक शीतलता, आ एतौ सगरो बहैत देखाएत गरम शोणितक टघार। चान ओहिना रहत हँसैत-खेलाइत, टुक-टुक देखैत हमर सबहक किरदानी। मुदा हम सभ.... हम सभ ओतौ बेपर्द भऽ जाएब एहिना चानक सोंझा। तखन ताकब कोन बाट?

रिलीफ

मर बँहि, ई भीड़ तँ खतमे नै होइ छै।

पूरा मियानीमे दर्जी टोल, जोलह टोली सभ मिला कऽ छह सए मरद-जनानी-बच्चा छल पछिला बेर। पछिला सालक खैरातमे एतबे गहूमसँ सगरो टोल महो-महो भऽ गेल छल।

"मालिक, गर कऽ नवका लिस्ट बनबितिऐ तखन ने देखतिऐ जे हमर दुनू भाँइक तँ नामे नै अछि।"

"रौ, सभ घरक लिस्ट तँ अछिए हमरा लग।"

"नै मालिक, एतए तँ छह मासमे दू-चारि बाप-पुतकँ फुटने कतेक घर बढ़ि जाइत अछि।"

"रे चनेसरा, ई हँजेड़ तँ बढ़ले जाइ छौ रौ।"

"हँ मालिक, गहूम आब सधै पर अछि, की करबै?''

"हे ई ले एक सए रूपैया।"

"मालिक, एकै सएमे कतेक गहूम एतै?''

"रौ चनेसरा, ई गहूम लेल नै छौ, ऐ रूपैयासँ कंडोम आनि बाँटि दही मियानीमे।"

जिनगी

एम्बुलेन्स दरबज्जा पर लागि गेल छलै। सभ बेटा-पुतौहु बूढ़ाक चारूकात तैयारीपूर्वक ठाढ़ भऽ गेल छल।

"कतएसँ अनलौं एतेक रास पाइ।"

"बाबूजी, जिनगीसँ पैघ पाइए नै छै। कतएसँ अनलौं, कोना अनलौं? से प्रश्न करब व्यर्थ।"

"हम नै कराएब आपरेशन। घुमा दिऔ लोकक पाइ। चालीस हजार टका परिवारक भरण-पोषण लेल राखि लेनाइ नीक। हम तँ आब मरणासन्न छीहे।"

एम्बुलेन्सक दरबज्जा खोलैत बेटा बाजल-

"बाबूजी, अहाँकेँ एखन जिवितो रहनाइ तँ आवश्यक अछि, परिवारक भरण-पोषण आ प्रकृति-प्रदत जिनगीक नाम पर।"

(पल्लव-जुलाइ-९६मे प्रकाशित)

सेवक

ओकर डाँड़मे खोंसल असलाहा देखि डेरा गेल छल सभ। बेरा-बेरी कऽ अनचिन्हार लोक सभ आबि ओकरा हाथ जोड़ए आ गोटा-गोटी कऽ मोटर साइकिलपर आगाँ बढ़ि जाए। चौक-बजारक गप्प गाम भरिमे पसरल आ सौंसे गाम दलमलित भऽ गेल।

गोटा-गोटी कऽ लोक चौकपर जुटि गेल। सभ अपनेमे घोंघाउज करैत रहल- ई डकैत छौ। हँ, ई तँ जेना डकैतक सरदार बुझाइए। अनहोनीक शंकासँ सभ ग्रस्त छल। किछु जुबक जीवटता देखबैत पुछलक- ‘‘अहाँ के छी ?’’, आ ओ मुस्किया देलक।

"अहाँ के छी, बजै किए नै छी?"

‘‘यौ, ओना नै सुनत ई, मारू एकरा, लऽ चलू पुलिस लग।’’

‘‘पुलिस.....’’, पुलिसक नाम सुनिते असलाहा खौँसल युवक हँसि देलक आ बाजल- ‘‘हमही तँ छी ऐ थानाक नवका प्रभारी पद्मश्री सोमदत्त।’’

अचानके सभ स्तब्ध भऽ गेल। सम्हरैत, हाथ जोड़ि प्रणाम केलक सभ। आ पुछलक- ‘‘ई सभ के छल?’’

"ई सभ पहिने उग्रवादी छल। पुलिस मुठभेड़मे मारल जाइत, हमहीं बचेलिऐ एकरा सभकेँ।’’

"अहाँ गद्दार छी, देशद्रोही छी।" एकटा युवक आँखि तरेड़ि सोमदत्तसँ बाजल।

"नै, समाजसेवी आ राष्ट्रभक्त दूनू छी हम।"

‘‘से कोना?’’

"एकर सबहक प्राण बचेलौं, एकरा सभकेँ समाजक मुख्यधारामे जोड़बाक लेल।"

"मुदा ई सभ तैयो वएह काज करत।"

"हम अभ्यास करा रहल छी समाजक मुख्यधारामे जोड़बाक लेल।’’

"मुदा फेरसँ समाजिक हेबा धरि ई सभ एक-दू वारदात तँ कैए लेत।"

"तँ अहाँ सभ वारदातकेँ रोकू ने।"

"नै, हमर कमीशन रुकि जाएत।"

टवेन्टी-टवेन्टी

-नै किन्नहुँ नै। पुरुख मात्र पैघत्व देखाएत से कोना हेतै ?

गामक बीच भरल पंचायतमे मूँह खोलए वाली पहिल महिला छलीह स्मृति। पंचैती ऐ लेल बैसाओल गेल छल जे महिला आ पुरूषमे के उन्नैस आ के बीस। आधार बीसकेँ मानल गेल छल।

पुरुष पंच- मौगीक सभ चीजक पूर्तिदाता पुरुख होइछ, तँए पुरुष मौगीक आश्रयदाता भेल। तँए पुरुष बीस आ मौगी उन्नैस।

मौगी पंच- मौगी पुरुष पर आश्रित नै ओकर सहचर होइत छै। जँ से नै तँ सभ पुरुष पुरुषे संग जीवन बिता लिअ। जँ पुरुष बाहरक देबाल होइछ तँ मौगी घरक रक्षक। पुरुष मात्र कमा अनैत अछि। शेष घर-दुआरि, बाल-बच्चा सभक देखभाल तँ मौगिए करैछ। सत्य तँ ई अछि जे पुरुषक जीवन संपूर्ण तखने होइछ जखन मौगी सहचारिणी बनैछ।

-एकदम सत्य, तँए दुनूक अधिकार बरोबरि।- प्रधान बाजल।

नेओं

जनता आब बेसी चालाक भऽ गेलैए। विशेष कऽ चुनावी मदमे। सत्य। ई मात्र कहबी नै छै, देखबोमे अबैए। नै..। दरबज्जापर अबैबला कोनो उम्मेदबारकेँ नै, नै ने कहैए। सभकेँ गप्पसँ खुश राखि सबहक चर-चित लैत रहैए। मुदा मतदान ओकरे लेल करैए जे कि बेसीसँ बेसी तात्कालिक लाभ दए।

जनता आब गमि लेलक नेता सभकेँ। सभटा जीत कऽ जाइ छौ जनहित वास्ते आ कहबैए जन-प्रतिनिधि। मुदा ओतए जा कऽ लगैए अपन पेट कुड़िआबए। एक-एक गोटे वा छोट-छीन पार्टीक शर्तपर बनबैए सरकार।

आ जखन बेर अबै छै जन कल्याणक, भारतक विकासक, तखने सहयोगी सभ घीचए लागैत छै टांग, अपन स्वार्थपूर्ति वास्ते। जनताक धेआने नै रहै छै या ई कहू जे जनता लेल किछु बाँचिये नै जाइ छै। आ ताधरि पाँचम बरख बीति जाइ छै, सरकारकेँ अपन कुर्सीक पौवा स्थिर करैमे। ता आबि जाइ छै अगिला चुनाव। जे सरकार पुनः कुर्सी स्थिर नै कऽ सकैए ओइ सरकारकेँ पलखति कहाँ छै जनहित देखवा बास्ते।

“ठीक छै सरकार बदलतै तँ मँहगाइ घटतै।"

(झारखंड सनेस-सितम्बर २०१०)

बहुराष्ट्रीय कम्पनी

नवका-नवका मशीनकेँ देखबाक लेल धर्रोहि लागि गेल छलै गाम भरिक लोकक। मौगी पुरुष सभ उत्साहित। काल्हि साँझे ठिकेदार आबि कहि गेलै- तोरा गामकेँ आब शहर जकाँ बना देल जेतौ। ऐ ठाम बनतै नवका कम्पनी। विदेशक कम्पनी।

-तँ की हम सभ उजाड़ि देल जेबै?

-नै, तोरा सभकेँ अगिला गामक परतीमे बसा देल जेतौ आ काज करबा लेल तोरे सभकेँ पहिने बजाओल जेतौ।

-बाह। ई तँ बहुत खुशीक बात हमरा आरु लेल। मजूरी करऽ परदेश नै जाए पड़तै।

साँझ होइत-होइत सभटा हरियर गाछ खसा देल गेल। सौंसे गाम, सुन्न जकाँ लागए लागल।

किछु दिन प्रतीक्षारत गौंआ जखन ऐ भूमिक अवलोकन करबा लेल आएल तँ चारूकात तारक घेरा देल छलै आ लगा देल गेल छलै कैक्टस। हाँ.... हाँ, ओकरा छुबही कने।

-हाँ..... हमर सबहक बसल-बसाएल जमीन उपटा देलक आ लगा देलक खाली काँट। ओ काँट जे भोगब तँ दूर छुअब सेहो कठिन।

(मिथिला सृजन- अगस्त-सितम्बर २०१०)

विश्वासघात

माए-बाबूक नै चाहितो रिंकी अपन दोस भाएकँ संग कऽ परीक्षा देबा लेल बोकारो गेल। ओ अटूट बन्हन एवं पवित्र सबंधपर विश्वास कऽ ओकरा संग गेल छल। करबो की करैत, अपन कोनो भाए जे नै छलै। संग जाइत के? ओकरा संग नै जाइत तँ अइ बेरक परीक्षा छोड़ए पड़तैक, मुदा ओ अइ बहुमूल्य अवसरकँ नै छोड़ए चाहैत छल।

अधरतिया... युवराज होटलक एकटा कोठरीसँ चिचिएबाक स्वर-"भइया, ई की कऽ रहलहुँ अहाँ? छोड़ि दिअ हमरा। भइया...।

ऐ बेरक स्वर बेस कड़गर छल। "हम अहाँक भाइ नै छी। हम अहाँक पति सेहो भऽ सकैत छी।"

"भइया, पति तँ भऽ सकैत छी मुदा पतित नै होउ।"

श्याम अपन दार्शनिक अंदाजमे बाजल- "लोक सभ अनचिन्हार बूढ़ा-बूढ़ीकँ कक्का-काकी, जवान लड़कीकँ सिस्टर, जवान लड़काकँ भाए कहैए। तँए की हम अहाँक भाए भऽ गेलौं?"

फेर स्वर आएल- "हमरा अहाँक बीच भाए-बहीनक नै, युवक-युवती मात्रक संबंध शेष अछि।"

सगरो कोठरी अन्हरिया गेल.....

अन्तर-आत्मा

-अहाँक मुँह केना लगैए जेना चाने हो।

-कने घुरि तकिऔ ने सजनी हमर नजरि गड़ैए।

छौंड़ाक हूजूममे सँ छौंड़िक हुजूमक एक गोट छौंड़ीकेँ चौल करैत जा रहल छल।

दोसर पल -एक गोट चुम्मा देबै फ्रीमे?

-हे सम्हारू अपन मुँहकेँ।

-जँ नै सम्हरत तँ.........

-तँ हे लिअ...

पएरक सैण्डिल हाथमे लए क छौंड़ाक मुँहपर।

-चौल केना करै छथि... जेना हम हिनकर सारि रहिअन्हि।

-ऐ एना खौझाइ छी किएक?

ऐ बेर छौंड़ा जीवट देखबैत अपन बानि पर अड़ल रहि बाजल- ऐ, अहाँकेँ मोन नै करैए जे हमरा मोनमे अछि ?

छौंडी कनडेरिए ताकि नजरि मिलेलक।

छौंड़ा गदगद भऽ बाजल -सारि नै छी तँ की हेतै, कुमारि तँ छी ने।

छौंड़ी बिहुँसैत तकलक। दुनूक नजरि सोंझा-सोझी भऽ ठमकि गेलै।

छौंडीक जीवटते दुनूक बिआह बिन दहेजक संपन्न भेल।

कमरुनिसा

-माए गै, तिकोनमा पाथर लगा दिऐ। बड़ सुन्नर लगतै।

-धुर बताहि, छोड़ि दही। बापकेँ कहै छलियौ तँ कहियो काने-बात नै देलकौ आ तूँ कोन छँए एखन।

-गे माए, ई पोला दए दे हमरा, ऐपर मोती हम चढ़ेबै।

-यै मैयाँ, की देखै छी निहाड़ि-निहाड़ि कऽ। नीक नै लगै छै की?

-गे माए, गै माए। बीत भरिकेँ छौंडी तँ बूढ़ो-बुढ़ानुसकेँ कान कटैए। यै कनियाँ हमरा वएह लहठी दिअ जे अहाँक कमरूनिसा बनौलक अछि। केहन छोलल छै। केहन सजाएल लगै छै। हमर कनियाँकेँ बड़ पसिन्न पड़तै।

अपन पहिल कमाइ स्वरूप पाओल बीस रुपैयासँ हुलसि उठल आ ओइसँ बेसी खुशी तँ ओकरा एहन भेल रहै जखन की खराजपुर वालीक भाउज ओइ लहठीकेँ देखि हैदराबादसँ आडर्र पठेने रथिन्ह।

कमरुनिसाक अब्बा, रहमानक बनाओल लहठीसँ मिथिलांचलक नाम देशक कतेको भागमे चर्चित भऽ गेल छलै। मुदा आब ओ नै रहल। समूचे लहेरियासरायमे असगरे आबि बसल छल ओ। आ तकरा बाद लहेरी जातिक पारंपरिक व्यवसायक परंपरा जकाँ बनि गेल रहमान।

कमरुनिसा कोनो कनियाँ-बहुरियाक हाथमे लहठी देखि बिहुँसि पड़ए-- हमरो बिआह हेतै। अपन बिआहमे लहठी हम अपने बनाएल पहिरबै।

रहमान दम्मासँ मरि गेल छलै। लहठीक काज जकाँ दम्मा सेहो ओकर पुश्तैनी चीज छलै।

-आँए गे छौंड़ी, दिन भरि खों-खों किए करैत रहै छैं?

-मैयाँ, आगि फुकैत-फुकैत कतेको सालसँ दम फुलैत रहैए। अही बेमारीसँ पहिने हमर अब्बा, फेर अम्मी हमरा छोड़ि चलि गेलै।

-कहू तँ, लहठीक मीणा सनक ठोर लाह सन स्याह लगै छै। एनामे के बिआहतौ तोरा। बिन बिआहले रहबे तों।

-नै यै मैयाँ, हमहूँ एक दिन लहठी पहिरबै। अपन बनाओल करजनियाँ लहठी। जे की नहेरियासरायक अलावे राजस्थानक जोधपुरे टामे भेटै छै।

-यै मैयाँ, ऐ बेरुक लहठी तँ केहन दन छै घिनाएल जकाँ । आब एहनेसँ काज चलबए पड़तै।

-किए, की भऽ गेलै बजारमे?

-आब कमरुनिसा नै रहलै।

-की भेलै ओकरा?

-लहठी बनेबा लेल आगि फूकए पड़ै ने, सएह लहठी सेकैबला आगि ओकर जिनगीक चिनगी बनि गेलै।

ग्लोबल वार्मिंग

बहुतो सरंजामसँ बनाओल गेल छल घर। घर पक्का तँ बनाएले गेल छलै मुदा ऐ महँक आधुनिक सुख-सुविधा आ एकर साज-बाज एकरा परोपट्टामे दर्शनीय चीज बना देने छल। टोल-पड़ोसमे फूसक घर बला सभकेँ कचोट लागै अपन कमाओल पाइ आ बनाओल घर पर।

जाड़मे साहेब द्वारा विदेशी ब्राण्डक हीटर, गीजरक उपयोग चकित करैत रहल अपन पड़ोसी सभकेँ। आ तइपरसँ ओ सभकेँ सुनबथिन्ह जे ऐ बेर प्रचंड गर्मी हएत। तखन देखब हमर सुख-चैन। आ ई कहि मोने-मोन खूब प्रसन्न होइत छलाह। मुदा ई सभ सुननिहारक मोन मन्हुआ जाइत छल।

सत्ते.. ऐ बेरक गर्मी.. आ रौदसँ लोक छटपटाए लागल। आ कनेकबे दिनक बाद अकाल पड़ि गेलै।

असक्त भऽ गेल सभ वातानकूलित यंत्र। पंखा आ बिजली। साहेबक छटपटीक कोनो विकल्प नै छल। पड़ोसिया, गौंआ-घरुआ सभ कछमछाइतो आशक संग दिन कटैत रहल। गमैया लोक सभ अपन-अपन प्रकृति प्रदत बाँस आ खढ़क घरमे संतुलित जीवन जीबैत रहल। किएक तँ जीवन भरिक भोगल यथार्थ शक्ति ओइ तापकेँ सहबाक क्षमता दऽ देने छल। आ वएह जीबाक बाट देखा रहल छल।

मुदा देखू जे ओ सौखपूर्ति, जे ग्लोबल वार्मिंगसँ बचबाक फेरमे आरो उष्मीय तापकेँ बढ़ा रहल छल।

गौंआ सभ रौद आ ताप सहितो हरियर मोने जीबि रहल छल, मुदा साहेब पानसँ निकलल माछ जकाँ भऽ गेल छलाह।

ईश्वर कोनो चीज सबहक लेल बनबै छथि आ मनुख अपन सुख-सुविधाक लेल निर्माण करैए।

सरकारी दलाल

-की तहूँ ऐ काजमे संग छलही। स्सार...... बजै किए नै छँए।

दरोगा जी ओकरा हुरपेटैत गरिया रहल छलाह, मुदा ओ चुप्प छल आ बीच-बीचमे मुस्कियाइत छल। असलमे ओ ऐ परोपट्टाक चर्चित समाजसेवी आ एकटा संस्थाक संचालक छल। ओकर अपराध एतनीए छलै जे ओ दरोगा जीकेँ कुचालिमे संग नै दै छलै।

ओ चुप्पी सधने बेरा-बेरी कनडेरिए आँखिये सबहक मूँह ताकि रहल छल। करमान लागल छलै लोकक मुदा केओ बाजए नै, कारण दरोगा विरुद्ध जे बाजल से...

धड़ाधड़ पहुँचि रहल छल बंदूकधारी सभ। आइ भोरे-भोर एही थानाक सिपाहीक बेटीक बलात्कार भऽ गेलै, सेहो कि तँ थाने परिसरमे।

-के छै रे ई फेकना स्सार। तों सभ बौक-बहीर किए बनल छेँ।

दरोगा पर साहबी झारैत एस.पी. साहेब बजलाह।

दबले जुबानमे दरोगा जी सूचित केलाह- "सर, तिन-टोलियाक छै।

-अरे फेकन सिंह? ओकरा पर तँ १०००० रुपैयाक इनाम रखने अछि सरकार। ओ सरबा तँ बड़का उचक्का आ तस्कर अछि।

फेर कने रुकि एस.पी. साहेब आदेश दैत बजलाह- जाउ पता करू। कतौ नुकाएल हुअए। जिन्दा कि मुर्दा हाजिर करु।

ऐ आदेश केर सूचना सौंसे पसरि गेल छलै। सभ अपस्याँत।

-हे.... ओइ घरमे अछि।

एकटा बच्चा इसारा दैत बाजल।

इसाराकेँ फौलो केलाह एस.पी साहेब तँ देखैत छथि जे फेकन सिंह दरोगा जीक चौकी पर बैसल। बस सिपाहीकेँ आदेश देलाह....

-एकरा पकड़ आ लऽ चल थानामे।

सिपाही मुँह नुड़िआबैत बाजल -सर दरोगा जीकेँ कहिऔन्ह ने। एस.पी. बजलाह -ई स्सार दरोगा की पकड़त? घरमे कुकुर पोसने अछि। एकरो लाइनमे ले।

तावत् दरोगा जी एस.पी. साहेब लग आबि हुनका एकात लऽ गेल आ बाजल -सर, परसूए ई अट्ठारह लाखक तस्करी केलक जइमे एक लाख तेरह हजारक लाभांश दऽ गेल अछि।

एस.पी. साहेब थोड़ेक नरम होइत दरोगा जीसँ बजलाह -ठीक छै, ऐ थानाक तँ अहीं मालिक छिऐ। अपराध नियंत्रित करबापर कने आरो बेसी धेआन दिऔ।

आ ई कहि एस.पी. साहेब स्पेशल टास्क फोर्सक आपात मीटिंग लेल विदा भऽ गेलाह।

जिया जरए सगर राति

अहा.. मुँह तँ लगै जेना चाने हुअए आ आँखि तँ बुझू जे मृगनयनी सन। कने मूड़ी तँ उठाउ। एक बेर नजरि मिला कऽ तँ देखिऔ।

-आँ...... एहन झटका तँ बिजुरियोसँ नै लागल छल। कोनो बात नै, बिआहक पछाति पहिल राति एहने संवेदनशील होइत छै।

-हे यै....की भेल। एना आँखिसँ गंगा-जमुनाक धार किए? हमरासँ कोनो गलती भेल की।

-नै गलती तँ हमरासँ भेल जे अपन गलतीक सजा अहाँकेँ दऽ देलौं।

-केहन गलती आ केहन सजाए?

किशोरी होइतहिं हम यौवनक मधुमासमे डुब्बी लगेबाक सोचि उतरए लगलौं। अमीरीमे पोसाइत, जुआनीकेँ पबिते मोन बान्ह-सिकड़ीकेँ तोड़ि बहार हेबाक लेल औनाए लागल छल। हम कइए की सकैत छलौं। किशोर वयमे भटकबाक एकमात्र कारण छल- ई भरल-पुरल देह जे जौबनक चरम पर जा टिकल छल। जकरा अमीरी आ जुआनीक बीचसँ निकलल संक्रमण घेर लेलक। बिआहो तँ अहाँ संग वएह सभ करेलक जे हमर बाँचल संपतिक पहिल उपभोग केने छल। हमर माए-बाप अपन बेटे जकाँ बुझि सभ सुख-सुविधासँ पूर्ण छुट्टा छोड़ि देलनि। कारण जे माए-बापक एक मात्र संतान रही हम।

-यै, हम बड़ड उम्मेदसँ आजुक रातिक प्रतीक्षा करैत रही। हमरा सोझाँ उपस्थित कएल गेल बहुत रास कथा स्थगित भऽ गेल छल। कारण छल हमर सोच- जे हम शहरुआ छौड़ीक लिव-इन-रिलेशनशिपक फैसन वालीकेँ अपनासँ दूर राखए चाहैत छी।

-यौ, हमर बिआह भऽ गेल। हमर कुमारिक पद छुटि गेल। मुदा हम अहाँक जिनगी खराप नै करऽ चाहैत छी। किछु बर्ख पहिने लागल एड्सक बेमारी हमरा जिनगीक सीमा देखा देलक अछि।

-सत्ये, बेमारीक कोनो विश्वास नै, मुदा अहाँ एकटा रोगी मात्र नै अहाँ तँ चरित्रहीनसँ बेसी किछु नै देखाइ छी हमरा। जँ एतेक निष्ठावान छी जे अपन रोग हमरामे नै देखए चाहैत छी तँ अपन मुँह पर पोतल करिखासँ हमर जिनगी स्याह किए केलौं?

-यौ, ऐ समाजक परंपरा निमाहैत लोक-लाज आ अपन रक्षार्थ पुरुषक गात लागब आवश्यक बुझलौं। बस।

बाहर रौदक धाह देखाएल। मुदा मोनमे अन्हारे-अन्हार पसरि गेल छल। उजासक बाट सेहो अन्हराएल।

भावना

ट्रेन दुर्घटनाक खबरि सुनिते चारू वर्णक गामक लोक घटनास्थल पर जुमि गेल। सभ अपना-अपना हिसाबें पीड़ित लोकक सहायतार्थ सरंजाम जुटा काज करए लागल।

स्वयंसेवकक भीड़ बेरा-बेरी अपना सरंजाममे घाइल भेल व्यक्तिक मरहम-पट्टी वा अन्यान्य आवश्यक सेवा देबए लागल। स्वयंसेवकक दल ऐ तरहें सेवा करैत आगू बढ़ैत गेल।

आलोक जीकेँ आगू बढ़ैक क्रममे नजरि एकटा युवती, जे खिड़कीक टूटल तख्तीक तरमे दबि कुहरि रहल छल, पर पड़ल।

छौंड़ीक कपड़ा शोणितसँ भीजल छल। समीजक बट्टम सभटा टूटल। उठबासँ सेहो असोथकित। ओ मात्र टुकुर-टुकुर तकैत देखाएल। आलोक जी युवा समाजसेवी जे आइ धरि समाज सेवाक खातिर एकसर जीवन जीबि रहल छथि, छौंड़ी पर नजरि गड़ौने रहि गेलाह।

छौंड़ी उकसुकाएल। मुँहसँ किछु बजबाक असफल प्रयास केलक। हाथो उठेबाक प्रयास केलक मुदा से ने भेलै।

देहसँ हारल मुदा जीबनसँ नै हारबाक कुलबुलाहटि। जोर दैत मुँह खोललक -भैया.... यौ... कुर्ताबला भैया।

आ..... वासनासँ अभिभूत समाजसेवी भाइ साहेबक भक खुजल। बजलाह..... की......की कहै छी।

-हमर कुर्तीक बट्टम लगा दिअ।

आ भइया अपन सेवा पूर हेबाक अनुभव केलनि। मुदा छौंड़ी तख्ती तर दबल ओहिना टुकुर-टुकुर तकैत रहल।

तंत्रमेल

एक-एक पाँती पढ़बामे रसगर लगै। आ लिखनिहार रभसगर। गढ़ि-गढ़ि कऽ पाँती बनौनौ सन बुझाइत छल। बुझाइ जेना ओकरा ऐ तंत्र-कन्याक अलावे कोनो छौंड़ीसँ आइ धरि भेटे नै भेल होइ। एखन धरिक पाँती-पाँती ओकरे समर्पित रहै। सोझाँ-सोझी कोनो गप्प कहाँ भऽ पाएल रहै एकरा सभकेँ। गप्प तँ दूर, भेटो नै छलै आइ धरि दुनूक।

-बुच्ची परीक्षा तँ पूरा भऽ गेलौ मुदा देखै छिऔ जे कम्प्यूटर पर भरि-भरि राति लागल रहै छँए। परीक्षाक समयमे तँ सकाले सूति जाइत छलह। की-की करै छीही आइ-काल्हि ?

-पापा एन्जवाइ।

-हँ..हँ, से नीक बात। वर्गक पढ़ाइ आ परीक्षाक बाद बोझ तँ हल्लुक भेलौए किछु दिनक लेल। चल, मोन सेहो हल्लुक कऽ ले।

-पापा, आब एकटा लैपटाप लेबए पड़त।

-किएक? कंप्यूटरमे ओ सभ चीज नै छै की जे तोरा चाही काज करबाक लेल।

-पापा, लैपटापसँ कहियो केखनो लोकक संपर्कमे रहि सकै छी।

-माँ ....गै माँ.....

-की भेलौ, कोनो खराप सपना देखलही की?

-नै गे माँ, सपना नै सत्ये छलै। तों मना करै छलएँहऽ तँ लगै छल अनसोहाँत। मुदा आइ सत्यसँ भेंट भऽ गेल। हम तँ ओइ युवकक प्रति जीवन न्योझावर कऽ देबाक सपनामे रही। मुदा अजुका समाचार हमर निन्ने नै आँखियो खोलि देलक।

-की देखलिही समाचारमे?

-ओ युवक जकरा हम अपन जीवनक आधार मानि लेने रही कंप्यूटर पर, ओ फुसिआहा छल।

-मतलब?

एखने समाचारमे देखेलक जे पुलिस ओइ युवककेँ जेलमे लऽ जाइत छलै। आ समाचार कहऽ बला कहैत छल.. मेलक करामातसँ फीमेल उपभोग करए बला पुलिसक गिरफ्तमे।

-हँ गै.... तंत्रमेलसँ मोनक शुद्धि भऽ सकै तखन ने।

बेरपर

-हम सभ पहिने एलौं मुदा खैरात पहिने नवटोलिया बलाकेँ बाँटल जा रहल छै। ओ मंत्रीजीक गाम छै तँए। हम सभ मंत्री जीकेँ भोट नै दै छिऐ की?

-ऐ, बहुत बकर-बकर करै छी अहाँ, खैरात लेबाक अछि तँ रहू ठाढ़ लाइनमे।

मंत्री जीक पिछुलका सभ रोब झाड़ैत बाजल आ एकटा बुढ़बाकेँ धकिया देलक।

-मंत्री जी मुर्दाबाद... मुर्दाबाद।

-खैरात नै तँ भोट नै।

-अहाँ सभ मुँह की तकै छी। चला गऽ बन्नुक, बर्दी पहीरि कऽ प्रदर्शनी लगबए एलौंहेँ?

-नै सर.. गोली चला देबै तँ लखीमपुर बला सभ नै छोड़त हमरा।

-यौ, खालियो बन्नुक फांयरिंग कऽ देबै तँ पड़ा जाएत ई सभ।

-आ भोटक बेर?

-भोटक बेर नोट छै ने। बन्नुक बल पर छापि लेबै। ई भुच्चर सभ एहिना मूँह देखैत रहि जाएत।

-यऔ मंत्री जी, बन्नुक तँ नामर्द लऽ कऽ चलैए, जकरा बुत्ता नै हइ छै लड़बाक। हम सभ तँ सभ तरहक बुत्ता रखै छी, बन्नुक किनबाक, रखबाक आ चलेबाक सेहो। कोनो नेताकेँ जितेबासँ लऽ कऽ हरेबा धरि सेहो।

आ सभ लखिम पुर बला अपन बोरिया उठबैत बाजल -हम लखीमपुर बला चैलैंज दै छी, जँ अहाँकेँ बुत्ता हुअए तँ अगिला भोटमे हमरा गाम आबू भोट मँगबाक लेल।

दियाद

पनही केर चमकी आ ओकर उपरका बनाबटि पर हमर नजरि पड़िते हमर मोन लोभा गेल। पहीरि कऽ भजारलाक बाद नाप सेहो फिट भऽ गेल।

मुदा जखन पहीरि चलए लगलौं तँ इहो पनही तरे-तर पएर काटब शुरू केलक। ठीक ओहिना जेना फरीक सभ तरघुस्कीमे लागल, सदिखन सतबैमे लागल रहलाह। हमरा सोझाँ छुच्छ दुलार आ पीठ पाछाँ हिनताइमे थाकथि नै।

हम अपन अगौत-पछौत पड़ोसी सभसँ बच्चेसँ परेशान रही। मुदा अपन संस्कारवश हुनकर सबहक सभ काजकेँ अनठा अपन बाटपर बढ़ैत रहलौं।

-हौ, चिरंजीव पएरक एहन दुर्दशा कोना भेलह? हम सभ तँ खराम पहिरै छी तँए पएर उदाम रहैए, मुदा तों तँ राजा-महराजा बला पनहीमे पएर घुसिऔने रहे छह ?

-यौ कक्का, ओ पनही तँ राजे-महराजे लेल छै जकरा पएर नै उठबए पड़ैत छै। हमरा सन बोनिहारक लेल तँ ओ काले बनि गेल। बाहरसँ जतेक चिक्कन-चुनमुन भीतरसँ ओतबे खलओदार केने जाइए.....

कक्का सूनि चलि गेल छलाह।

गाँती

परोपट्टामे सोरहा भऽ गेलै जे ऐ बेरक बी.डी.ओ. पिछड़े जाति एलैए। कतेको गामक लोकक आशा जागि गेल। सभ सतेलहा जाति सभ प्रसन्न भऽ गरीबी रेखासँ कटल नाम जुड़ि जेबाक, अधखड़ घर पूरा हेबाक सपनाकेँ यथार्थमे बदलबाले सोचए लागल।

चपरासी जा कऽ बी.डी.ओ. साहेबकेँ कहलक -सर, बड़का मालिक आएल छथि कोनो काजक लेल। अहाँसँ भेंट करताह।

-बड़का मालिक?

-हँ सर, मने हरहर बाबू।

-हरिहर बाबू ? अच्छा कहिऔन भीतर एताह।

दरअसल पुरना बी.डी.ओ. नवका बी.डी.ओ. केँ कान फुकि गेल रहथिन्ह -ऐ ठाम जाति-पातिकेँ बिसरि जाएब। परोपट्टाक मालिक हरिहर बाबूकेँ धेने रहब। आ नवका बी.डी.ओ. दहला फेकैत बजलाह पुरना लग -तँए ने छह लाख दऽ कऽ बदली करबेलौं हए हम।

-जी मालिक प्रणाम।

-की रौ प्रमोदवा, तोहरो आँखि चढ़ि गेलौए जतियारी बी.डी.ओ. केँ देखलासँ।

-नै मालिक, की कहै छी अहाँ? काज नै भेल की?

प्रमोद एकै संग दूटा प्रश्न केलक।

-हमर काज नै हएत? हमरा संग खचरै करत तँ तेहन ठाम पठा देबन्हि सरबेकेँ जे मुइलाक बादो मोन रखताह तोहर जाति भाइ।

-हे रौ, रुक... कहाँ जाइ छेँ झुंडक-झुंड साहेबक चेम्बरमे?

-आँइ रे प्रमोद, पहिने नै डेराइ छलेहँ। आब तँ अपन जाति-भाइ साहेब एलखुनहँ। की काज छलौ से कह ने सोंझा-सोंझी।

-इंदिरा अवासक पाइ छै बाँकी।

-जते गोटेक पाइ बाँकी छह, सभ गोटे छह सए रुपैया जमा करह।

-आँए यौ, सुनै छिऐ जे साहेब छोटका लोकक उपकारी छथिन्ह, तखन ओ पाइ लेथिन्ह।

-पाइ ओतए नै हमरा लग जमा कर, सभ फाइल पास भऽ जेतौ। आ हे एकटा बात बुझ.... साहेब तोरा सभसँ नै हमरासँ पाइ गिनबै छथि।

बिढ़नी

गुत्थम-गुत्था भेल जा रहल छलै लोक, रेलगाड़ीक आरक्षित डिब्बामे। भीतरसँ बाहर धरि सोहरल लोक। देखबासँ बुझना जाइत छलै गाड़ीक जेनरल डिब्बा सन। गाड़ी खुजि चुकल छल, मनुखपर मनुख खसै। की मनसा, की मौगी, की बच्चा, सभ पिस्तम-पिस्त। सुतए बला सीटपर सुतब तँ दूर, बैसबाको जगह नै रहै। उपरको सीट सभ समानसँ भरल। निच्चा तँ आरो बेसी समान। हम मोने-मोन खौंझाइत रही सरकार वा की रेलवे बलाक किरदानी पर। प्रतीक्षारत लोकक सूची एतेक नमहर बनेबाक कोन प्रयोजन।

अपन आरक्षित सीट पर बैसल सहयात्रीकेँ पुछलिअन्हि -अहाँ सभ गोटेँ केँ वेटिंग टिकट अछि की?

धखाइते मुदा नजरि मिला कऽ जबाब देलाह -वेटिंग टिकट कहाँ अछि केकरो। हम सभ जेनरल टिकटपर फाइन दऽ जा रहल छी।

अपने डिब्बामे किछुए आगूसँ सुनबामे आएल- हम सभ बैसबे करब। हम सभ कतए जाएब। हमर सबहक कोनो सीट नै अछि की?

एकटा आर स्वर -भाइ, हम तीन मास पहिने सीट लेलौं अपन सुविधा लेल। आब एखन की हम ठाढ़े जाएब? हमर सीट खाली करै जाउ।

-नै करब सीट खाली। अहूँ आब अहीमे गुंजाइस करू।

-नै, हम गुंजाइश नै करब।

-नै करब तँ जाउ, जे करबा अछि से करू। हम सभ एतऽ बैसले रहब।

-टी.टी साहेब, जगहसँ बेसी लोक, कहू ई केहन नाइंसाफी छै। वेटिंग बला तँ चलू अंतिम स्थान धरि जाएत। मुदा फाइन टिकट बला कतौ केकरो समान उतारि कऽ जाएत। ओकरासँ हमरा सभकेँ के बचाएत?

-सुनू, हम सुरक्षा बलकेँ फोन करै छिऐ, मुदा ओहो की कऽ सकत ऐ गजबज भीड़मे। पहुँचियो तँ नै पाएत।

-तँ शिकाइत करी हम रेलवे विभागमे?

-यौ, श्रीमान् ओकरा आमदनी पहिने चाही, लोकक सुरक्षा तँ हाथीक दाँत छै, खाली देखबैत रहत। अहाँ शिकाइत कराउ, जँ किछु हेबो करत तँ वएह, जे अधिकारी बेर-बेर अहाँकेँ बजा ओइ घटनाक बारेमे खाली पूछत।

अगुआ

अमेरिकी संस्था युनेस्कोक आवाहनपर गरीबी भगेबाक मादे एकटा साधारण बैसारक आयोजन कएल गेल छल जइमे संपूर्ण गामवासी उत्साहपूर्वक उपस्थित भेल। बैसारमे आएल लोकमे सँ अस्तित्वक अनुसार दू फाँट बनि गेल छल। दुब्बर गामक लोककेँ पाछू आ धोधिगर गामक लोककेँ आगूमे स्थान देल गेल छलै।

रोनाल्डो एरिक्सन बैसारक उद्देश्यकेँ फरिछबैत बजलाह -भारत गरीब देश अछि, से सुनि-सुनि युनेस्को दुखी भऽ अहाँ सबहक मदति वास्ते आगू आएल अछि। अहाँ सबहक नीक भविष्यक वास्ते धनक एकमुश्त राशि अहाँक पंचायतक मुखियाकेँ देबाक निर्णय कएल गेल अछि। ऐ पाइसँ अहाँ सभ गामेमे रोजगार कऽ आर्थिक रूपेँ समृद्ध हइ जाउ।

-नै किन्नहुँ नै, हमर सबहक विकासक लेल आएल पाइ सोझे हमरे सभकेँ देल जाए। नै तँ अहू बेर वएह हेतै जे होइत एलैए।

आ रोनाल्डो अवाक् छलाह ई सुनि। आ सोचि रहल छलाह, वास्तवमे भारत गरीब नै अछि बल्कि एकरा नकली रूपें गरीब बना देल जाइ छै किछु लोक द्वारा।

सभ खत्म भऽ गेल छल।

साढ़े एकैसम सदी

-हेलो..... हाय।

-की हाल छै ?

-फाइन।

-ई कोनो एबाक समय छै। डेढ़ घंटा लेटसँ ।

-खिसिया किए गेलौं। रस्तामे सौरभ भेटि गेल। सटि गेल हमरासँ। कहू, हम भागि जइतौं? केहन एक्सपिरिएन्स गेन करैत ओ? मुदा अहूँ तँ समए पर नहिए आएल हएब।

-हँ, रियाकेँ गोल्डेन पार्कमे तते ने मोन लगै छै जे घेंटा-जोड़ी कए लेने छल। छोड़िते नै छल।

-जखन रियासँ एते घेंटा-जोड़ी अछि तखन हमर कोन काज? अहाँसँ नीक सौरभे जे हमर बाट जोहैए।

-ओ नामरद अछि की जे अहीं टाक बाट जोहैए।

-हम जाइ छी।

-कत?

-सौरभ लग।

-कथी लेल।

-इन्जॉय करबा लेल। हेलो जुगनू कतऽ छी? बुढ़बा गाइड लग। की करै छी। हर्षक संग छलौहें की? आब फ्री छी? आबि जाउ हमरा लग। कतए छी अहाँ? डीयर पार्कमे। आबै छी?

-तँ करू प्रतीक्षा जुगनू केर हम चलै छी।

-खिसिआइ छी किए? आब की केओ केकरो पर आश्रित छै। एक जँ केलक मना तँ दोसर तैयार छै।

आब बिआह तँ केकरोसँ कतौ कऽ लैए। मुदा भोगैए केओ, कतौ केकरो दोसराकेँ। पहिने प्रथा छल घर बदलबाकेँ, मुदा आब तँ घरबला बदलबाक परंपरा छै।

(विदेह अंक-७८मे प्रकाशित)

दुन्नू जना एकै धना

काल्हि तँ भरिपोख गरिएने रहथिन्ह यशोदा बाबूकेँ मुदा आइ तँ एकेठाम चाह.........

शंकर बाबू लग जाइ छी, जिनका लगसँ केओ निराश भऽ कऽ नै अबैत अछि।

-मालिक, रोका-टोकी तँ साधारण बात भऽ गेलैए। ई तँ सभ दिन रहैत आएल अछि। मुदा आइ... आइ तँ ई बनमानुख सभ हमर इज्जत.....

-हँ यौ... एखने चौक पर चर्चा भऽ रहल छलै। छी.. छी, आब लोककेँ अपनो समाजमे इज्जत आ प्रतिष्ठा दाँव पर लागि गेलैक अछि। जे भेलै से उचित तँ नहिए। मुदा आगू फेर एहन नै दोहराओल जाए। तँए कुकर्मीकेँ छोड़ल नै जाए से हमर कहब। आइ ओ अहाँ संग केलक... काल्हि केकरो संग कऽ सकैत अछि। गंगा बाबूकेँ कहिऔन्ह ने, जे ओइ टोलमे जँ केओ मोकाबिला कऽ सकैए तँ मात्र गंगा बाबू। यशोदा बाबूक बेटाक विरुद्ध जँ केओ कल्ला अलगा सकै छथि तँ इएह गंगा बाबू।

-उहूँ... दुन्नू जना एकै धना।

-मतलब?

-मतलब जे काल्हि गंगा बाबू जे यशोदा बाबूकेँ गरिअबै छलखिन्ह सएह दूनू गोटे आइ एकै चौकी पर बैसि चाह पिबै छलाह। ई किछु नै करथिन्ह मालिक।

-यौ, ई हमर वशसँ बाहरक गप्प अछि।

-बुझि गेलौं। गाम भरिमे यशोदा बाबू आ हुनकर कपूतकेँ छोड़ि सभ नामरद अछि। ठीक छै, निसाफ आब कोरटेमे मंगबै हम।

-नै किन्नहुँ नै.. हमर बाबू जीक बीत-बीत खेत बिका गेलन्हि। घराड़ी धरि बिका गेलन्हि। निसाफक आसमे तरबा सेहो खिया गेलन्हि। निसाफ नै भेटलन्हि। भेटलन्हि तँ खाली तारीख। एते तारीख कियो नै उठा सकत।

आ किछुए दिनक बाद यशोदा बाबूक धुधुआइत घरमे चिचिआइत हुनक बेटा मरि गेल।

रासि

आधा भरल घैलसँ छिलकैत पानि जकाँ हालतिमे पहुँचि गेल छल ओ। सबहक सोझाँ मोछपर ताव दैत कहए -केओ कतबो उधिआएत ऐ चुनाबक बेर, मुदा ऐ बेर तँ हमहीं.......

जइ टोल जइ गाममे जाइ, सभ ठामक लोक कहए जे भोट ओकरे देब। किएक तँ कतेको बर्खसँ ओ सबहक निस्वार्थ भावे सेवा करैत आएल अछि।

गामक अल्पसंख्यक बला भागमे बैसक भेल। ऐ बैसारमे लोककेँ उकसाबैत कहल गेल जे प्रभुदयाल तेना ने मोछ पर ताव दैए जइसँ लगै छै जे वएह टा मोछ बला छै, बाद-बाँकी निमोछिया। मुदा प्रभुदयाल केर सेवा लऽ छोटका-बड़का तेना ने दबल रहए जे केओ ओकरा विरुद्ध चुनाबमे नै ठाढ़ भेल।

-इंजीनियर साहेब, आब मोछक सबाल छै। अहीं किछु कऽ सकै छिऐ। आन सभ गोटेँ पाछाँ हटि गेलाह। अहाँ विक्कीकेँ एक बेर कहि कऽ देखि लिऔ चुनाब लड़बाक लेल।

-आँए यौ, गामक गोलैसीक कारणेँ हम ओकरा ऐ धधरामे किए पाकए दिऐ? कतेको पाइ खर्च कऽ ओकरा पायलट बनेलौं अछि हम। ओना जँ हम कहबै तँ तैयार भऽ जाएत, मुदा प्रभुलालकेँ छोड़ि अहाँ सभ ओकरा भोट देबै की?

आ आब रंग-ताल शुरू भेल।

प्रभुदयाल -हम चुनाब जीती कि हारी, अहाँ सबहक हम सेवा करैत रहब। बस खाली एतबा अनुरोध अछि जे चुनाब जिता हमरा पक्का सेवक बना दिअ।

इंजीनीयर साहेब -हम सभ कहियो राजनीतिमे नै रुचि रखलौं। मुदा ऐ बेरुक चुनाब हमरा अनसहाज लागल जे बिनु पढ़ल आ कुकर्मी उम्मेदवार अहाँ सबहक बीच अछि। आब अंतिम फैसला अहीं सभ करब जे अहाँकेँ की चाही।

-मालिक मुँह सम्हारू। प्रभुदयाल बड़का-छोटकाक सभ दिन सेवक रहल अछि। ओकरा लेल कोनो अनसोहाँत बात बरदास्त नै कएल जाएत। अहाँक विक्की जरूर पढ़ल अछि मुदा ओ कतेक लोकक उपकार केलक अछि?

-यौ जनता लोकनि, प्रभुदयालकेँ सरकारी पाइ शोधबाक आदत लागि गेल छै। जखन जन-प्रतिनिधिक ठप्पा लगतै तखन अहाँ सबहक लेल आएल पाइक खजाना धरि खाली कऽ देत। दोसर जे गाछी बला कांड छलै तइमे तँ ओकर नाम एखन धरि छै ओकर।

आ विक्की बाबू एक मतसँ भोट जीति गेलाह।

प्रभुदयाल भोट देबाक आभारक संग अनुरोधे बाजल -जनता लोकनि, हमरा तँ प्रखंडसँ जिला धरिक बाट देखल अछि अपन गुजर-बसर लेल। मुदा अहाँ सभ ताधरि पिछड़ल रहब जाधरि सत्ताक रासि अपना हाथमे नै लेब। सभ हँ मे हँ मिलबैत अगिला चुनाबक बाट जोहए लागल।

सड़क-छाप

-सरदार भाइ, कने एम्हर देखहक।

सुन्न भेल बाट पर एकटा एकसर जाइत छौड़ीकेँ देखि छौंड़ा सभ चौल करए लागल।

छौड़ी पहिने सकुचाएल, डेराएल, एम्हर-ओम्हर तकलक। केओ कतौ नै देखेलै। हिम्मत बन्हलक आ ससरि कऽ गेल छौड़ाक समूह लग।

-रौ, वस्तु बड़ड चिक्कन लगैए। कने नाम पुछि अबहीने।

समूहक एक सदस्य अपन दार्शनिक टोनमे बाजल।

-गै की नाम छौ ?

-तान्या...

-बापक नाम की छौ?

-मयंक....

-हे रुक.. सरदार भाइ कने एम्हर आबह।

-भाइ .... छौंडी बाजल, -ओ अहूँ सबहक भाइ छथि।

-हँ हमर सबहक सरदार भाइ छथि ओ।

-ओ तँ हमरो भाइ छथि।

ऐ बेर छौंड़ा सभ अकचकाएल। ताबत सरादर आबि गेलै।

-भइया... गोड़ लगै छी। हाथ जोड़ैत छौंडी बाजल।

सरदार भाइ अकचकाइत बाजल.... हम नै चिन्हलौं अहाँकेँ।

-यौ, अहाँ हमर बटोही भइया छी।

-हमरा कनिको मोन नै पड़ैए .... खएर चल हमरा सबहक संग।

-नै यौ बटोही भाइ। भाइक रूपमे चिन्हार तँ कऽ लेलौं हम। मुदा मनुखक रूपमे अनचिन्हार छी अहाँ।

-मतलब?

-मतलब जे मनुखक पेटेसँ निकलल सभ मनुख नै होइ छै, जकरामे मनुखताइ होइ छै सएह मनुख भेल। बाँद बाँकीकेँ दानव बुझू जेना अहाँ लगै छी।

निवेश

-कते दिन हमही काज एबौ। किछु अपनो तँ सोच। सुनिते बिजुली जकाँ लागल रहै ओकरा।

मोन स्थिर करैत बाजल -बाबू जी किछु दिन आरो खर्च दिअ। हम विश्वाससँ कहै छी जे अहाँक पाइकेँ हम सार्थक करब।

-आरो कते दिन हम ताकू तोहर आशा? सोलहमे बर्खसँ तों हमरा ठकि रहल छँए। आब तँ बीसम गीड़ि गेलें तों। हम तँ अठारहम बर्खेमे जमा लेने रही मालिकाना।

-बाबू जी अहाँक जमाना दोसर छल। तहिया बेरोजगारीक ई विकट समस्या नै रहै।

-हँ, से तँ चिन्ता होइए जे तोरापर खर्च कएल धनक वापसी हेबो करत की नै। जँ भइयो गेल हमरा मरलाक बाद, तँ ओइसँ लाभ की? हम तँ अल्पकालिक निवेश आ आपसीमे विश्वास रखैत छी।

बेटा बकर-बकर मुँह देखि रहल छल।

नपना

एकटा मार्केट रिसर्च कंपनीक दिससँ एकटा लोककेँ प्रश्न पूछल गेलै -घरक मुख्य कमेनिहार की करै छथि?

-मुख्य कमेनिहारक माने की?

प्रश्न केनिहार फरिछबैत कहलकै -मने घरमे बेसी के कमाइत छथि?

-अच्छा... हम दुनू गोटे बैंकमे छी आ दुनूक दरमाहा बरोबर अछि। पत्नी बजलीह।

पति बीचमे बजलाह -घरक मुख्य कमेनिहार तँ पुरुषेकेँ मानल जाइत छै। चाहे पत्नी कमाइत होथि वा नै।

पत्नी तमतमाइत बजलीह -हम एखनो कमाइत छी। आ भविष्यक कमाए बालाकेँ सेहो आश्रय दैत छिऐ।

-से कोना?

-हम नौकरीक अलावे घरक सभ काज करै छी जे पुरुषक वशक बात नै छै। तखन अहीं कहू जे मुख्य कमेनिहारमे हमही आएब ने।

पति उतारा लेल मार्केट रिसर्च कंपनीक आदमी दिस देखए लागल। मुदा ओइ कंपनीक आदमीक मुँह लटकि गेल छलै..... कारण ओकरो पत्नी दिन भरि काज करै छलै आ घरक काज सेहो करै छलै।

उत्थर

-मर बँहि, आब कथी कमी छै कोनो बड़कासँ। हमरो अओरिक धिया-पूता स्कूल-कलेज पास करऽ लागल अछि। बेटा मैट्रिक पास कऽ कओलेजमे गेल, भातिज सेहो स्कूल जाइत अछि। पाइमे देखाउ तँ कोनो बड़कासँ कम छी की। हँ ओ सभ सरकारी नोकरी करै छै, हाकिम-हुकुम छै, से दीगर बात। मुदा हमहूँ सभ दिन-राति खटि पाइ जोगा लेलौंहँए। हँ एक बात जनै छिऐ, ओ सभ कतबो कमाइ छै तँ पूरा नै होइ छै। काल्हि जोगिन्दर मालिक अपने हमरा दूरा पर आबि पचास हजार रुपैया सूदि पर लऽ गेलाह। कहलखिन्ह जे बेटीकेँ इंजीनीयरिंगमे नाम लिखेबाक अछि। भाइ आब अहीं कहू जे बड़का हम सभ भेलौं की हुनकर सभहँ लग बड़का धएले छन्हि।

-हौ सुनह.... हुनकर सबहक सभ बाट बनल छन्हि। आ ओ सभ अपन अगिला पीढ़ीकेँ बढ़ेबाक ब्योंतमे तोरा सभकेँ ब्याज दै छथुन्ह। आ तों सभ पाइ हेबाक अन्हरमारिमे ब्याज कमा अपनाकेँ पैघ बुझै छह। कहियो एतेक सोचलहक जे हमर अगिला पीढ़ी कतऽ जा रहल अछि? कोन ठाम पहुँचि अटकत? की हेतै ओकर भविष्य? बड़काकेँ बेटा पढ़तै तँ हाकिम हेतै, तोहर पाइ-पाइ चुका देतह। आ तोहर धिया पुता कोनो तरहें नौकरी पाबियो जेतह तँ ओकर पिछलगुए बनल रहतह।

जा धरि ई फाँट नै भरि सकबह ताधरि एहिना उधिआइत रहबह अकासमे।

देश-भक्ति

सीमाक एकसर, स्वतंत्र आ मस्ती बला जिनगी ओकरा आलोचनाक पात्र बना देने छल। मुदा ऐ सबहक परवाहि केने बिना ओ अपन जिनगी जी रहल छल।

बिआहक पछाति एक बेर फेरसँ ओ समाजिक आलोचनाक पात्र बनि गेल छल आ एकरा कारण छलै जे ओकर घरकेँ खुजैत केओ नै देखने छल। आइ पतिक जेबाक चारिम मास बीति रहल छलै आ ओ एकटा सुन्दर बेटाकेँ जनम देलक। मुदा एकर बापकेँ सूचना कोना भेटतै से सोचि ओ व्याकुल भऽ गेल। फेर मोन एलै जे चिट्ठी लीखि दै छिऐ, मुदा डाकघर के जाएत? हालति तँ ओकर छलै नै जाए बला। से सोचिते छल कि बाहरसँ कोनो आदमीक अवाज एलै... चिट्ठी अछि। ओहनो हालतिमे ओ गेट पर आएल। चिट्ठी खोलि पढ़लक-------हमरा खेद अछि जे अहाँक पति शहीद भऽ गेलाह..... आगू नै पढ़ सकल ओ।

मुदा पत्रकार सभकेँ उत्तर ओ एना देलक... ओ मरलथिहँए नै, बल्कि अपन दोसर रूपमे आएल छथि।

आ सीमा अपन बेटाक लेल सैनिक स्कूलक नाम ताकए लागल।

भूख

सतबरतीक मोहर अपना उपर लगेबाक लेल नै जानि कतेको सासु आ माएकेँ आरोपित केलक। एतेक धरि जे कनियाँ-बहुरियाकेँ सेहो नै छोड़लक।

ओकरा पर शंका तँ भरि गौंआ करै मुदा ओइ मौगीक छुटल मुँहक सोझाँ सभ अपन-अपन मुँह बन्द राखए। असलमे ओकर घरबला सेनाक नौकरीमे छल। छुट्टीक कमी। तइ पर ओ मौगी गजबकेँ सुन्दर रहै। तँए ओ गामे नै अनगौंआक नजरिमे आबि गेल रहै।

एक दिन गाम भरिक मौगी सभ ओकरा बैसार कऽ कऽ खूब ज्ञान देलक। ओ मौगी खूब आक्रोशित स्वरें बाजल -ऐ गामक कोन घरक बेटी-पुतोहु हाट-बजार आ मेला जा कऽ नै घुमि अबैए। मुदा हम तँ कहियो अपन घरसँ बहरा कऽ दूरो पर नै जाइ छी। आब केओ पाहुन-परक एतै तँ हम ओकरा कोना कऽ भगा देबै।

-यै कनियाँ, नै बरदास भेल तँए मुँह खोलै छी। पाहुन-परककेँ नै भगा देबै मुदा ओकरा संग करै बला रंग-रभसकेँ तँ रोकि सकै छी ने। देखिऔ, सबहक बेटी-पुतोहु अपन सासु-माए केर संग जा कतौ घुमैए आ फेर चलि अबैए। केकरो किछु भेलैए आइ धरि। अहाँ तँ घरेमे रहि पेट कऽ लेलौं अछि। घरबला जे अगिला मासमे आएत तकरे लेल ई रखने छिऐ ई अनजनुआ चिलका।

-बुझ्झा ने देथुन्ह ईएह सभ। हम तँ फोन पर फोन कए हारि गेलौं। नौकरी तँ बुढ़ारी धरि हेतै मुदा जबानी की धराउ राखल छै। ओ तँ आबि घुरि जेतै, फेर दियाबातीमे एबाक बचन दऽ कऽ। ऐ बीचमे हमरा जखन मोन हएत संग रहबाक, तकर कोन बाट हेतै। अहिना कुहरि कऽ मरबै की? आकि एकरा शांतिक लेल दोसर बाट तकबै हम। भूख लगला पर भोजन चाही खाली बचन नै।

आ सभा खत्म भऽ गेल छल।

डेग

हम अपन जिनगीक पहिल डेग मायक हाथे उठौने रही आ दोसर डेग बाबा अंगुरी धरा दियेने छला। तकर पछाति नै जानि पएरक डेगकेँ आगाँ बढ़ेबामे कतेक गोटेक हाथ लागल हएत। आ बाबूजी, हुनके प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष छाया हमर साँसकेँ उघैत रहल।

-बौआ कतऽ छलौं एतेक राति धरि?

-सिनेमा हॉल मे।

-आ ई के अछि?

-हमर सहपाठिनी, नम्रता।

-अहाँ के कनेकों चिन्ता अछि अपन जिनगीक, कनियो सोचै छी अपन भविष्यक?

-बाबूजी, बहु बड़बड़ेलौं, बन्न करू मुँह! अहाँसँ बेशी चिन्ता अछि हमरा अपन भविष्यक। अहाँकेँ तीन दिनसँ कहि रहल छी, लाउ दिअ हमरा तैयारी वास्ते दस हजार रूपैया।

-नै पार लागत आब हमरासँ ई सभ। चोरी करू हम? जतेक पार लागल पढ़ा लिखा कऽ पुर्ण केलौं।

-अहाँकेँ उघैए पड़त हमर भार, जम्मदाता जे छी।

बाबूजीकेँ कहियो शिकाइत करबाक अवसर नै भेटलनि हमर व्यवहार आ नैतिक विचारक प्रति।

देह, मोन आ प्रेम

सबीना आ मोहसिनक जोड़ी सौंसे जोलह टोलीमे प्रसिद्ध छल। किएक तँ मोहसिन सभ साँझ पोलिथिन पीबि कए आबए आ सबिनाकेँ खूब मारै गरियाबै। मुदा सबिना चुपचाप पाथर बनि जाए। लोककेँ आशचर्य लागै। जखन की ओकर टोलक आर मर्द-जनानी मीलि हपनामे खूब उठा-पटक, भागादौड़ी करए, हरबिर्रो मचि जाए टोल भरिमे।

कहियो काल सबिना सेहो मोहसिनसँ मुँह लगा लिए आ मोहसिन भरि इच्छा कूटि दै ओकरा। बाजा-भुक्की बन्न भए जाइ दूनूमे। तखन सबिनाक बाप अबै।

सबिनाक बाप बड़का मौलबी छल। सबिनाकेँ सिखाबए पढ़ाबए जे अपन अल्ला मियाँ नराज भए जाइ छथिन्ह जँ केओ मौगी अपन पतिपर हाथ छोड़ैए तँ। अब्बाक कहल बात सुनि अपन नोरकेँ नूआक खूँटमे सुखा लिए। सम्मान करए अल्ला आ कुरानकेँ।

मोहसिनकेँ मुइना आइ तेसर दिन भए गेल रहै। ओ सभ दिन भोर-साँझ ओकर कब्र लग जा भेसै छल। कब्रक उपर बेना डोलबैत छल। देखहो बला लोककेँ आशचर्य लगै।एकरासँ बेसी प्रेम तँ कोनो मौगी अपन पतिकेँ नै केने हेतै।

मुदा..........मुदा सत्य छल जे ओकरा मोहसिनसँ प्रेम नै रहै। ओकरा मगजमे खाली कुरान शरीफक ओ बात घुसल रहै जाहिमे कहल गेल रहै जे" साँच मुसलमान वएह अछि जे कुरानक तहरीरकेँ मानैए"

आ सबिना कहियो सुनने रहए जे " जाबत धरि पतिक साराक माटि नै सुखाइत छै तावत दोसर बिआह वा परपुरुख संपर्क कुरानक नजरिये अवैध मानल जाइत अछि"

आ....आब आस्ते, आस्ते मोहसिनक कब्र केर गिल्ल सारा सुखा सक्कत भेल जा रहल छलै।